UNIVERSAL LIBRARY
OU_182416
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81·6/B57K Accession No. G·H·16

Author भारत सरकार, दिल्ली।

Title काव्य-संगम, 1957

This book should be returned on or before the date last marked below

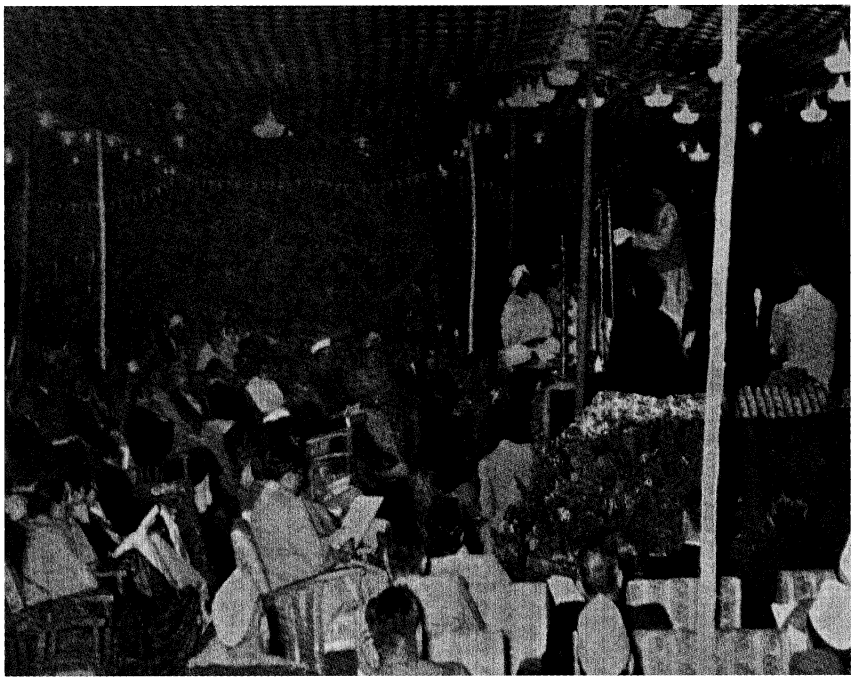

प्रथम आकाशवाणी सर्वभाषा-कवि-सम्मेलन का एक विहंगम दृश्य

आकाशवाणी

काव्य-संगम

१

पब्लिकेशन्स डिवीजन
सूचना और प्रसार मंत्रालय
ओल्ड सेक्रेटेरिएट
दिल्ली-८

अप्रैल १९५७

मूल्य एक रुपया

मुद्रक : एलबियन प्रेस, कश्मीरी गेट, दिल्ली

अनुक्रम

आमुख		५
भारत की सांस्कृतिक एकता	डा० बालकृष्ण केसकर	७
भाषाओं का आपसी सम्बन्ध	श्री जवाहरलाल नेहरू	९
संस्कृत		१२
श्री महादेव पाण्डेय		
रूपान्तरकार : श्रीमती इंदुजा अवस्थी		
असमिया		१४
श्रीमती नलिनी बाला देवी		
रूपान्तरकार : श्री हंसकुमार तिवारी		
उड़िया		१८
डा० मायाधर मानसिंह		
रूपान्तरकार : श्री प्रभाकर माचवे		
उर्दू		२६
श्री रविश सिद्दीकी		
रूपान्तरकार : श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव		
कन्नड़		२९
श्री द० रा० बेन्द्रे		
रूपान्तरकार : श्री नरेन्द्र शर्मा		
कश्मीरी		३३
श्री रहमान राही		
रूपान्तरकार : डा० हरिवंशराय बच्चन		
गुजराती		३६
श्री उमाशंकर जोशी		
रूपान्तरकार : श्री नरेन्द्र शर्मा		

तमिल ४१

श्री सुब्रह्मण्य योगी

रूपान्तरकार : श्री सुमित्रानन्दन पन्त

तेलुगु ४६

श्री देवुलपुल्ल कृष्ण शास्त्री

रूपान्तरकार : श्री सुमित्रानन्दन पन्त

पंजाबी ४९

श्रीमती अमृता प्रीतम

रूपान्तरकार : डा० हरिवंशराय बच्चन

बंगला ५२

श्री बुद्धदेव वसु

रूपान्तरकार : श्री हंसकुमार तिवारी

मराठी ५८

श्री यशवन्त दिनकर पेंढारकर

रूपान्तरकार : श्री प्रभाकर माचवे

मलयालम ६३

श्री जी० शंकर कुरुप्प

रूपान्तरकार : श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

हिन्दी ७३

श्री मैथिलीशरण गुप्त

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

श्री सुमित्रानन्दन पन्त

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

आमुख

गणतंत्र-दिवस के अवसर पर राजधानी में जहां अन्य अनेक समारोह होते रहे हैं वहां इस बात का अनुभव हुआ कि इसमें कवि-गिरा का योग भी होना आवश्यक है। यह गिरा दिग्दिगंत में गूँजे, इसके लिए आकाशवाणी से अच्छा कौन माध्यम हो सकता था ?

अतएव विगत २५ जनवरी, १९५६, को एक अखिल-भारतीय कवि-सभा का आयोजन हुआ जिसका उद्घाटन प्रधानमन्त्री तथा साहित्य अकादेमी के सभापति श्री जवाहरलाल नेहरू ने किया।

इस अवसर पर भारतीय विधान में गिनाई गई सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के शीर्ष कविगण उपस्थित थे। यह पहला अवसर था, कदाचित् भारतीय इतिहास में पहला अवसर था, जब कि एक मंच पर एकत्र होकर चौदह भारतीय भाषाओं के कवियों ने अपनी अमृतवाणी का सुख श्रोताओं को दिया। हिन्दी कवियों ने इतर भाषाओं के कवियों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि के रूप में उनकी कविताओं के पद्यानुवाद प्रस्तुत किए।

इस स्मरणीय अवसर की स्मृति जगाए रखने के उद्देश्य से, वहां पढ़ी गई मूल तथा अनूदित कविताओं का संग्रह प्रस्तुत है।

समारोह में संस्कृत और उर्दू कविताओं के अनुवाद नहीं पढ़े गए थे। पाठकों के लाभ के लिए इस संग्रह में उनके गद्यानुवाद दे दिए गए हैं। उडिया-कवि डा० मायाधर मानसिंह उपस्थित नहीं हो सके थे, उनकी कविता पढ़ दी गई थी।

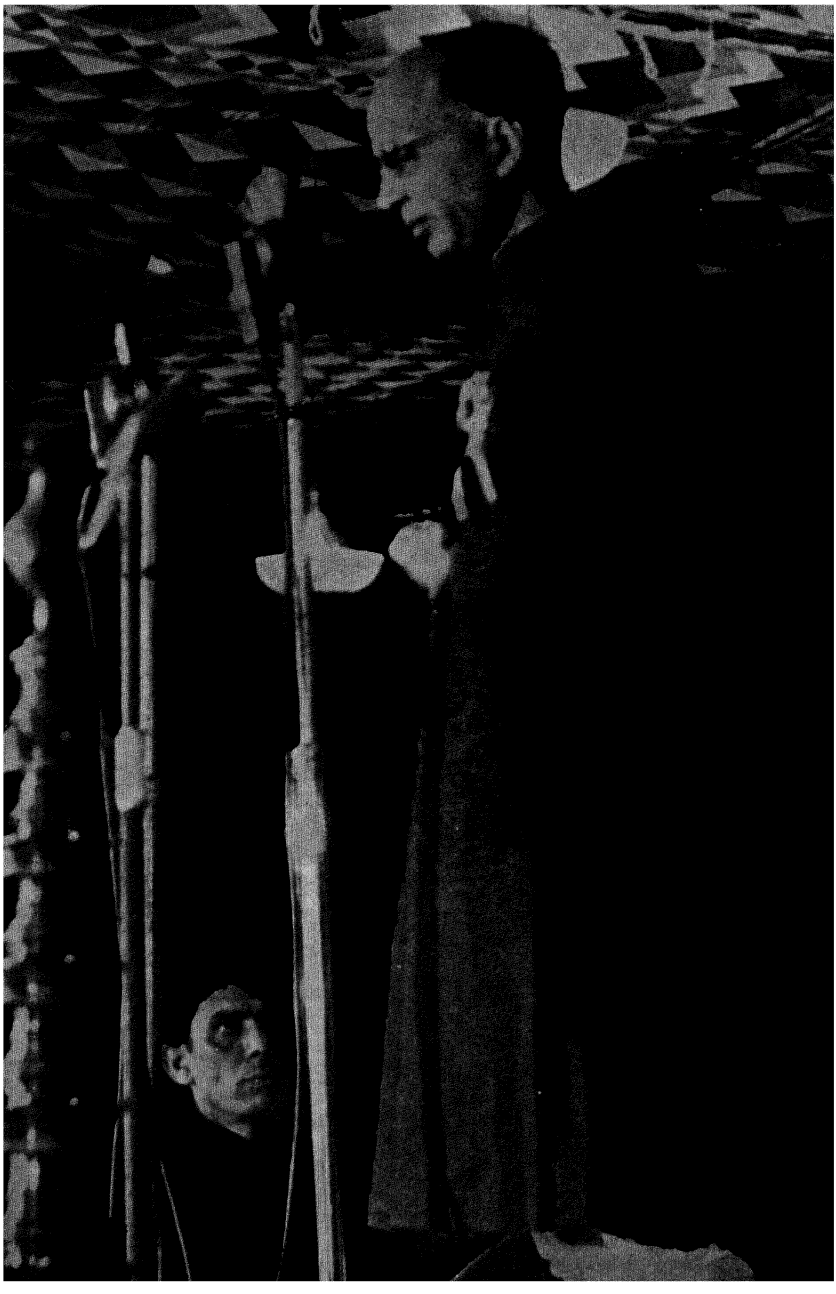

सूचना और प्रसार मंत्री
डा० बालकृष्ण केसकर

भारत की सांस्कृतिक एकता

डा० केसकर का स्वागत भाषण

आज आल इंडिया रेडियो की तरफ़ से आप सबका मैं यहां हार्दिक स्वागत करता हूँ।

आल इंडिया रेडियो पिछले तीन चार साल से भारत की सांस्कृतिक एकता के बारे में लगातार कोशिश कर रहा है। रेडियो के लिए यह फ़ख़ हासिल है कि अगर आज किसी ने हमारी भाषाओं को बनाने में, उनका साहित्य बढ़ाने में, ज़्यादा से ज़्यादा मदद की होगी तो वह रेडियो ने की है। आज ऐसी बहुत सी हमारी भाषाएं हैं कि जिनकी पिछले कई सालों की प्रगति केवल रेडियो की वजह से है। आज रेडियो ही एक माध्यम है जो ज़्यादातर अपना काम हमारी भाषाओं में करता है, अंग्रेज़ी में नहीं करता। पिछले तीन चार साल से हम लगातार इस कोशिश में हैं कि भारत की जो अलग-अलग भाषाएं हैं उनको नज़दीक लाकर भारत की एकता को और मज़बूत किया जाये। इसलिए अलग-अलग भाषाओं की जो रचनाएं हैं, जो किताबें हैं, जो कविताएं हैं, उनको दूसरी भाषाओं में तर्जुमा करना या अनुवाद करना, उनकी जो अच्छी से अच्छी किताबें हैं उनको दूसरी भाषाओं में करना, और रेडियो के ज़रिये उनका प्रकाशन करना, यह लगातार जारी है। हम कह सकते हैं कि इस तरीक़े से रेडियो भारत की अलग-अलग भाषाओं को एक दूसरे के पास लाकर देश की एकता को मज़बूत कर रहा है। यह देश की सांस्कृतिक एकता के लिए सबसे बड़ा और ज़बर्दस्त साधन है।

इससे अच्छा क्या हो सकता है कि आज गणतन्त्र-दिवस के साथ रेडियो भी हमारी भाषाओं के अच्छे से अच्छे और उज्ज्वल से उज्ज्वल प्रतिनिधियों को एक साथ लाकर हमारी संस्कृति की जो विविधता है, जो विचित्रता है, और जो एकता है, उसको एक साथ ही दिखला दे?

ख़ुशी की बात है कि हमारे प्रधानमंत्री आज यहां उपस्थित हैं और

उन्होंने इस कार्य के लिए अपने बहुमूल्य समय में से थोड़ा सा दे दिया है। आज अगर हमने उनको आमंत्रित किया है तो वह केवल बहैसियत प्रधान मंत्री के ही नहीं बल्कि बहैसियत साहित्य अकादेमी के चेयरमैन के भी। हम सब जानते हैं कि सांस्कृतिक कामों में उनकी दिलचस्पी कितनी गहरी है और अगर आज हमारे देश में सांस्कृतिक कामों के बारे में कुछ प्रगति हुई है, कुछ दिलचस्पी बढ़ी है, तो उसमें बहुत कुछ स्फूर्ति उनकी है। मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि वह यहां चन्द शब्द कह कर आए हुए कवियों को और हम सब को उत्साहित करें।

★

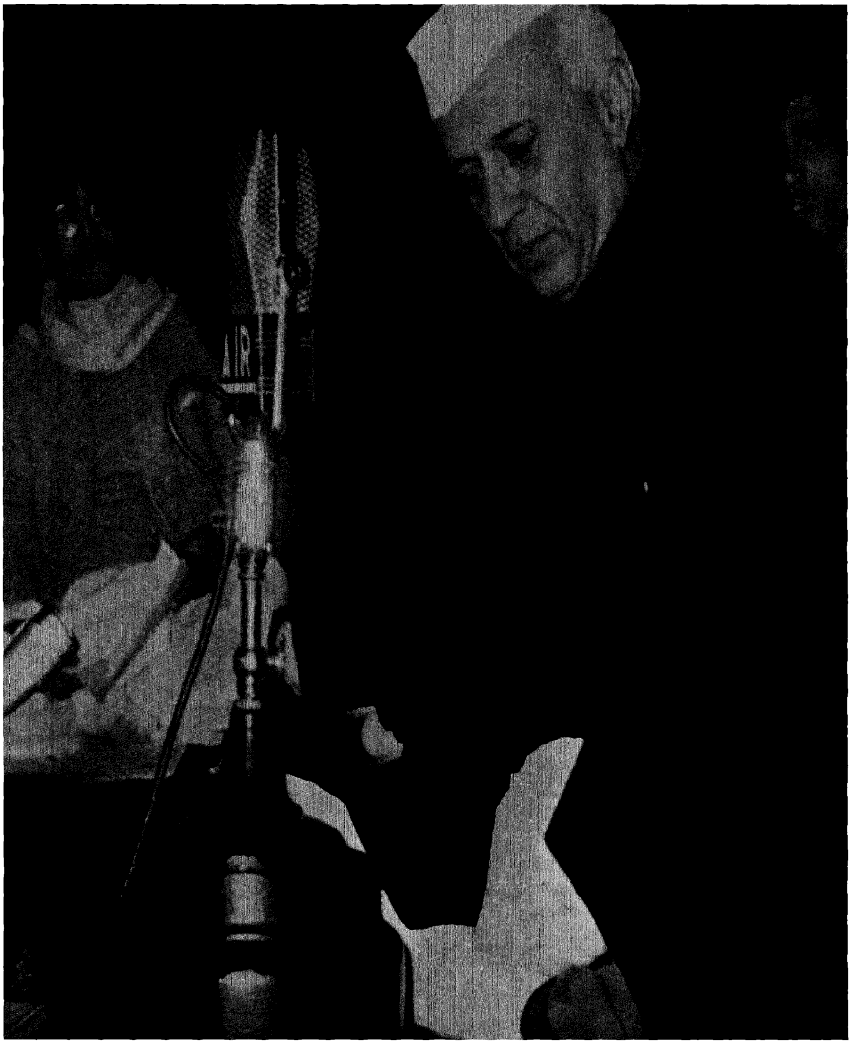

प्रधान मंत्री तथा साहित्य अकादेमी के सभापति
श्री जवाहरलाल नेहरू

भाषाओं का आपसी सम्बन्ध

श्री जवाहरलाल नेहरू का उद्घाटन भाषण

आज हम यहां जमा हुए हैं, इस कवि सम्मेलन में, जिसमें भारत के अनेक भाषाओं के कवि हैं। थोड़ी देर में आप उनकी कविता सुनेंगे।

आप मुझसे पूछें कि ऐसी कवियों की बिरादरी में तुम कैसे पहुँच गए? तो बात तो यह है कि इसका मेरे पास कोई माक़ूल जवाब नहीं है, क्योंकि उमर भर में मैंने किसी भाषा में भी कभी कविता नहीं लिखी है। फिर भी मैं आपके सामने हाज़िर हुआ, क्योंकि मुझे यह हुक्म मिला, प्रधानमन्त्री की हैसियत से तो नहीं, क्योंकि प्रधान-मंत्रियों में जो कुछ ख़ूबियां हों, यह सुनने में नहीं आया है कि वह कवि भी हुआ करते हैं। यह सही है कि साहित्य से और कविता से मुझे प्रेम है, लेकिन बहुतों को होता है। तो मैं बुलाया गया शायद इसलिए कि मैं साहित्य अकादेमी का सदर हूं और कुछ इस अकादेमी ने सब भाषाओं में देश के साहित्य को, कविता को, बढ़ाने की कोशिश की है।

मैं समझता हूँ कि हमारा देश, या कोई भी देश, कितनी ही तरक्क़ी करे, अगर उसका साहित्य और कविता तरक्क़ी नहीं करती तब वह कुछ बेजान रहेगा। साहित्य एक चीज़, चाहे थोड़ी हो, लेकिन वह एक चीज़ है जिसके बग़ैर किसी देश या किसी जाति में जान नहीं आती, और मैं इसको आवश्यक समझता हूँ कि एक देश की उन्नति में उसका साहित्य भी आगे बढ़े। बल्कि एक और तरह से मैं आप से कहूँ कि अगर किसी देश के बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम हो कि वहां कैसा काम होता है, कितनी तरक्क़ी हुई है, क्या क्या कारख़ाने बने हैं, क्या क्या योजनाएं चल रही हैं, क्या क्या फ़ाइव-इयर प्लैन्ज़ हैं, और ख़ाली उसके साहित्य को मैं कुछ जानूं, तो उस साहित्य से झलक पड़ जाएगी कि उस देश में जान है कि नहीं है, वह देश आगे बढ़ रहा है कि सुकड़ रहा है, या जमा हुआ है। इसलिए साहित्य, ज़ाहिर है, एक बहुत ही आवश्यक चीज़ है। अब साहित्य या कविता कोई ऐसी चीज़ तो नहीं है कि आप एक मशीन चलाइए उसमें से निकलती आए, या रेडियो वाले हुक्म

दें तो कविताएं निकलती आएं किसी कारख़ाने से । वह या तो दिल से निकलती है, दिल और दिमाग़ से; नहीं तो कोई नक़ली चीज़ उसकी जगह आ जाती है। तो हमें कोशिश करनी है कम से कम कि ऐसी हवा, ऐसी फ़िज़ा हो, वायुमंडल हो, जिसमें यह चीज़ बढ़ सके।

लेकिन भारत में, सब जानते हैं, कि बहुत सारी प्रसिद्ध भाषाएं हैं। उनका एक-दूसरे से सम्बन्ध काफ़ी है, और कभी-कभी ऐसा काफ़ी सम्बन्ध है कि एक दूसरे से लड़ा करती हैं और यह समझती हैं कि हम एक दूसरे को दबा के आगे बढ़ेंगे या हम ज़बर्दस्ती किसी की छाती पे बैठ जाएंगे । तो भाषा तो इस तरह से बढ़ती नहीं है, न साहित्य बढ़ता है। जैसे कि फूल निकलते हैं और बढ़ते हैं उस तरह से यह चीज़ें बढ़ती हैं। मुझे इस बात का पक्का विश्वास है कि भारत की भाषाएं एक-दूसरे से मिलकर और एक दूसरे के सहयोग से बढ़ेंगी। इसके माने यह नहीं हैं कि कोई एक दूसरे को दबाए। लेकिन इसके माने यह ज़रूर हैं कि एक-दूसरे से सीखें, भाषाओं में एक-दूसरे के विचार आएं, एक-दूसरे के शब्द आएं, और एक-दूसरे के ढंग आएं । इस तरह से भारत के साहित्य का मैदान बहुत बड़ा हो।

मैं तो, ख़ैर, उसको और भी बढ़ाने को तैयार हूँ कि साहित्य एक चीज़, आख़िर में, एक देश की नहीं बन सकती है, वह सारी दुनिया की चीज़ है। जितने ऊँचे साहित्य हैं, या दुनिया के साहित्य में जो ऊँची चीज़ें लिखी गई हैं, वह दुनिया भर की हैं। किसी एक भाषा की और किसी एक देश की नहीं हैं। इसलिए अगर कोई साहित्य बढ़ना चाहे तो उसकी खिड़कियां और दरवाज़े सारी दुनिया की हवाओं के लिए खुलने चाहिए। हां, अपना ढंग उसका होगा ही, और ढंग रखना है; नक़ल करने से तो कुछ नहीं होता।

तो यह विशेषकर आवश्यक है कि हमारे देश की जो भाषाएं हैं वह एक दूसरे से बहुत क़रीब का सम्बन्ध रक्खें। एक दूसरे की भाषा को हम पढ़ें, सीखें-समझें, और यह विचार जम जाय कि देश में अगर एक भाषा बढ़ती है तो उसके बढ़ने का असर और भाषाओं पर भी अच्छा पड़ता है; वह भी बढ़ती हैं। यह नहीं कि किसी और को धकेल के वह बढ़ती हैं।

तो यह, जो आज एक सम्मेलन है और जिसमें आप भारत की बहुत सारी भाषाओं में कविताएं सुनेंगे—और उनका अनुवाद भी होगा हिन्दी में, उसके बाद—यह एक अच्छी चीज़ है, क्योंकि यह उनका मिलना आपको दिखाती है, जो ज़रूरी है।

इस तरह से हम साहित्य अकादेमी में भी बहुत कोशिश कर रहे हैं कि सब भाषाओं की सहायता करें, ख़ाली हिन्दी की नहीं। अगर कोई साहब कुछ

और समझते हैं तो ग़लत समझते हैं। साहित्य अकादेमी देश की सब भाषाओं की उन्नति चाहती है, और उनकी सहायता करना चाहती है और उनको क़रीब लाना चाहती है। हम उसमें, थोड़े दिनों में, किताबें निकाल रहे हैं, एक भाषा के दूसरे में अनुवाद। जिसमें सारे देश की भाषाओं का साहित्य आप पढ़ सकें। चाहे एक ही भाषा को आप जानें, तो और को भी आप जान लें, उनकी कविता, और उनका साहित्य। दुनिया के और देशों के साहित्य का भी हम इस तरह से अनुवाद अपने देश की सब भाषाओं में करना चाहते हैं। बाहर के देशों की भाषाओं की किताबों की एक लम्बी फ़ेहरिस्त भी हमने बनाई है जिनका अनुवाद यहां की सब भाषाओं में हो। इस तरह से मैं समझता हूँ हम अपनी भाषाओं की सहायता करेंगे और उनका मैदान ज़्यादा फैलेगा, वसीअ होगा।

ख़ैर, यह सब तो सहायता करने के तरीक़े हैं। आख़िर में भाषा बढ़ती है अच्छे साहित्यकारों से, अच्छे कवियों से। कोई ऊपर के धकेलने से तो बढ़ती नहीं है। लेकिन मुझे विश्वास है कि हमारे देश में ऐसे लोग हैं और ऐसे लोग पैदा होते जाएंगे।

तो अब आप कविता सुनिए जिसके लिए आप यहां जमा हुए हैं, या दूर दूर से सुन रहे होंगे, और यह उचित है कि आज के कवि सम्मेलन में, आज की कविताओं में, सब में पहले संस्कृत की हो।

★

संस्कृत

कवि : श्री महादेव पाण्डेय
रूपान्तरकार : श्रीमती इन्दुजा अवस्थी

संस्कृत साहित्य के प्रकांड विद्वान् और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत महाविद्यालय के प्रधान तथा साहित्य विभाग के अध्यक्ष हैं। 'भारतशतकम्' की रचना की है।

★

भारत-वंदना

यस्मादेते प्रसूता विविधतनुभृतो येन जीवन्ति भूताः
यस्मिन् गच्छन्ति चैक्यं समधिकगुरुता यत्र मातुः पितुश्च ।
विश्वं सर्वं विभर्ति प्रकृतिरयमथो पूरुषश्च स्वतन्त्रो
देशं तं वा परेशं सुरवरझरिणीसुन्दरं कीर्तयामः ॥१॥
आलोलोल्लोलमालाकलकलकलिताम्भोधिकूलाल्लालाद्
यावन्नीहारभूमीधरधवलशिलालग्नभूसंविभागान् ।
सीमान्तादा च बंगोपसरिदधिपतिं यावदस्त्येष सस्यैः
पत्रश्यामैद्रुमाग्रैर्वलयितवसुधो भारतं नाम देशः ॥२॥
बंगैः संगीतकीर्तिः कलितकलकलश्चोत्कलैरान्ध्रबन्धु-
र्मद्रैरुन्निद्रमुद्रो जवजनितजयोद्गुर्जरः सिन्धुविन्दुः ।
पंचापैरंचितश्रीर्मधुमधुरधुरौ मध्ययुक्तैर्बिहारै-
रार्यावर्ताभिधानो जयति जनपदो मानिनां जन्मभूमिः ॥३॥

आद्योन्मेषाद् विधातुः प्रथमविकसितादाद्यपद्मायपत्रा
दारब्धा पुण्यपुंजैः कलुषलवलवनाप्यसंभिन्नगात्रैः ।
देवैरप्यात्मलाभं श्रयितुमतितरां वांछिता विश्वमूर्ते-
र्निर्माणोत्कर्षसीमा परमसुषमया कापि नीराज्यते भूः ॥४॥

गोर्वाणैः पुण्यपुंजो मधुमथनकलाकेलिनारिप्रसद्म-
क्रीडारंगः प्रकृत्या मणिगणनिकरैः शेवधिर्वेदवाग्भिः ।
पूर्वाभावा विशिष्टाध्ययनगुरुकुलं शिक्षयारम्भभूमिः
संस्कृत्या सुप्रसूतिः सहजसुकृतिनामेष देशो गृहीतः ॥५॥

हम स्वर्गंगा के समान मनोरम उस भारत देश का कीर्त्ति-गान करते हैं, जिसमें विविध वृक्ष-वनस्पतियाँ हैं, जो प्राणियों के जीवन का आधार है ; और जिसमें सभी प्राणी बन्धु-भाव से रहते हैं ; माता-पिता का जहाँ समादर है ; प्रकृति विश्व का संभरण करती है ; और 'पुरुष' स्वतंत्र है ।

भारत देश के कूल कलकल लहरियों से ललाम हैं ; हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियों से इसकी भूमि सुशोभित है ; शस्य और वृक्ष-पत्रों की हरीतिमा से यह वसुधा को अलंकृत करता है ; इसके सीमान्त पर बंग देश के उपान्त का सागर उल्लसित है ।

मनस्वी-जनों की जन्मभूमि आर्यावर्त्त की जय हो; जहाँ बंग-देश का कीर्तिवान संगीत है; जहाँ उत्कल का कलित कलकल है; जहाँ आन्ध्र-निवासियों की जाग्रत मुद्रायें हैं ; जहाँ सागर-विजयी गुजरात देश है ; जो पंजाब देश से श्रीवेश है; मध्यदेश और बिहार से जिसका केन्द्र प्रदेश मधुयुक्त है ।

यह आदि देश विधाता के प्रथम पद्म-पत्र सा विकसित हुआ है ; यह भूमि पुण्य-पुंज, निष्कलुष देव गणों के अवतरण की वांछनीया है ; यह ब्रह्मा की सर्वोत्तम रचना है ; अपनी परम सुषमा से समस्त पृथ्वी का शृंगार है ।

यह देश सुकृतियों का आगार है । देवताओं ने अमृत-मंथन का पुण्य-कार्य यहीं सम्पन्न किया । मणियों से यहाँ की प्रकृति समृद्ध है । यह वेदाध्यायी जनों की भूमि है । शिक्षा के आदि-स्थान गुरुकुल यहीं हैं । यह संस्कृति-गर्भा भूमि है ।

असमिया

कवयित्री : श्रीमती नलिनी बाला देवी
रूपान्तरकार : श्री हंसकुमार तिवारी

असम की प्रसिद्ध कवयित्री। १८९७ में गौहाटी के प्रसिद्ध बार्दोलोई घराने में जन्म। आधुनिक ढंग की शिक्षा नहीं मिली; जो कुछ सीखा जीवन से और अपने वंश की उदार और स्वदेश-भक्तिपूर्ण परम्परा से। 'पिता' शीर्षक उनकी प्रथम कविता १२ वर्ष की अवस्था में एक पत्रिका में छपी। छोटी अवस्था में वैधव्य ने उनको अध्यात्म की ओर आकर्षित किया। उनकी रचनाओं में रहस्यवाद है, प्रकृति और आध्यात्मिक प्रेम के गीत हैं। 'संधियार सुर', 'सपोनार सुर', और 'पारस मनि' उनके कविता-संग्रह हैं। अपने पिता स्वर्गीय नवीनचन्द्र बार्दोलोई का जीवनचरित्र भी इन्होंने 'स्मृतितीर्थ, शीर्षक से लिखा है। रवींद्रनाथ ठाकुर की कविता से बहुत प्रभावित हुई हैं। १९५४ में असम साहित्य सभा की अध्यक्षा चुनी गईं।

★

आह्वान

पूवाले मुक्तिर उषा जिलिकिछे पूबे पूबारुण।
प्रजातंत्र भारतर जनगण ऊलाह मगण,
नव प्रभातर नूतन दिनर नूतन बछरे आनि,
सोंवराइ दिले मुक्त भारतत नब करमर बाणो,

भारत सदाय आछिल स्वाधीन आजिओ स्वाधीन आमि ।
पयत्रिश कोटि भारतबासीये विश्व थाकिब जिनि ।
युग अवतार श्रीरामचन्द्र कृष्ण बुद्ध शंकरर
जनमदायिनी भारतबर्ष ज्ञानदात्री मानवर ।
भारतर संजीवनी प्रति धूलिकणार माजत,
आछे लेखा महत्वर पुण्य लिपि-बुरंजी पातत
अनन्त बिज्ञान ज्ञान महानता महिमा बिकाश
अमर आत्मार रश्मि प्रज्ञालोके विश्व परकाश ।
साम्राज्यर संघातत शान्तिहीन राङली पृथिबी ।
हिंसाद्वेष लोकक्षय पापे म्लान युगर सुरभि ।
स्तम्भित जीवन धारा थमकिल जीवनर गति,
साम्राज्य पीड़ित आत्मा जनगणे मागिले मुकुति ।

कँपिल उत्तराखण्ड 'तथागते' दिले शान्तिवाणी,
जीवप्रेम अहिंसार महाधर्म्मे 'पंचशील' दानि ।
साम्राज्य उत्सर्गी दिले मानवर कल्याण ब्रतत,
सत्यप्रेम अहिंसार त्यागमय जीवन पथत
शिकाले महान मन्त्र भारतत नव जीवनर,
बिलाले भ्रातृत्व प्रीति विश्व मैत्री मरु मरतर ।

सेइ मन्त्रे भारत जागिल, महात्मार महिमा प्रकाशि
विश्व चमकिल देखि भारतर अपूर्ब्ब संन्यासी,
महात्मार ध्यान स्वर्ग प्रजातन्त्र भारतवर्षर
मानुहे रचिब युग भारतर नव विधानर ।
मुक्त भारतर प्रजा मुक्त बायु आकाश मण्डल,
प्रजातन्त्र उचवर बरषिछे आशिष मंगल ।

हियाइ हियाइ फुल प्रेरणार सुखर कमल ।
बाधाहीन जनस्रोत अभियान उल्लास मुखर,
स्वाधीन जीवन गति शक्तिमान भारत सन्तान ।
नव जीवनत जागे कर्म्ममय बिशाल आह्वान ।
विश्व मैत्री चेतनारे उद्‌बुद्ध भारत अनुरागी ।

दुचकुत लागे रं सृजनर सपोनर रागि ।
प्रतिभार इन्द्रधनु बिचित्र बरणे रूपायित
प्राणे प्राणे मुखरित जीवनर मधुर संगीत ।
मृत्यु विभीषिकामय रणोम्मत्त उतला धरात ।
भारतर शान्ति वाणी बरषिछे पुष्प पारिजात ।
भारतर पुण्यभूमि स्वर्गसम पवित्र धूलात
ऐक्यमय महामन्त्रे रामराज्य पातिम धरात ।
विजयिनी भारतर आमि युग बिजयी सन्तान,
नतुन जीवन गीति पृथिबीक आमिये शुनाम ।

★

आह्वान

उदित मुक्ति की उषा, दमकता पूरब नभ है,
हैं आनन्दमग्न गण-भारत के जनगण सब ।
किरणें नये प्रात की ले आयीं कल्याणी,
मुक्त देश के लिये कर्म की नूतन वाणी ।

हम स्वाधीन रहे, स्वाधीन रहेंगे भी हम,
जगज्जयी पैंतीस करोड़ पुत्र चिर सक्षम ।
रामकृष्ण की जन्मभूमि है भारत जननी,
बुद्ध और शंकर की भी यह जन्मदायिनी ।

है संजीवन सना धूल का कतरा-कतरा,
पावन लिपि में है इतिहास यहाँ का निखरा ।
महिमा और जोत का अक्षय यहाँ कोष था,
अमर आत्मा के प्रकाश से दीप्त लोक था ।

साम्राज्यों की रक्त-तृषा से रंजित धरती,
हत्या द्वेष पाप से युग की सुरभि म्लान थी ।
जीवन की धारा हत, जीवन की गति आहत,
लगीं माँगने मुक्ति आत्मायें पीड़ित नत ।

कपिलवस्तु से एक आत्मा अभिनव जागी,
सुख ऐश्वर्य असीम विभव से बना विरागी।
पंचशील के महाधर्म की गूँजी वाणी,
सत्य, अहिंसा, विश्व-बन्धुता की कल्याणी।
उसी मंत्र से फिर गूँजा भारत का आँगन,
त्याग-तपस्या से बापू के जागा जनगण।
चकित रह गया विश्व देख यह नया जागरण,
संन्यासी का ध्यान-स्वर्ग साकार हुआ बन।

कटीं दासता की जंजीरें, मुक्त देश है,
मुक्त वायु, नभ का मंगलमय नया वेश है।
बरस रहा आशीश, महोत्सव पर यह मंगल,
जन-जन के मानस-सर फूले सुख के शतदल।
जीवन बाधाहीन उमंगें नयी चपल हैं,
प्रगति पंथ में बढ़े चरण ये सबल-प्रबल हैं।
नवजीवन में जगे कर्म का नव आवाहन,
विश्व-बंधुता की उद्‌बुद्ध चेतना अनुदिन।
हो स्वप्निल उन्माद आँख में नव सर्जन का,
इन्द्रधनुष प्रतिमा का हो जगमग सतरंगा।
प्राण-प्राण में जीवन का संगीत मुखर हो,
माटी की धरती पर झिलमिल स्वर्ग सुघर हो।

रक्त-स्नान से रणोन्मत्त लथपथ है धरती,
पारिजात-सी शांति-सुधा भारत की झरती।
ऐक्यमंत्र से रामराज्य हम यहां बनायें,
और विश्व को जीवन का मधुगीत सुनायें।

★

श्री हंसकुमार तिवारी

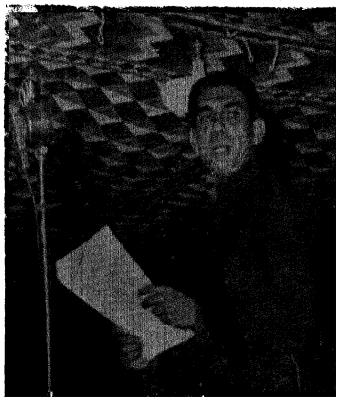

जन्म सन् १९१८; मानभूमि, बंगाल। पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य में प्रवेश। 'बिजली', 'किशोर' आदि पत्रों के संपादक तथा कई समाचार-पत्रों से संबद्ध रहे। अनेक प्रसिद्ध बँगला पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कर चुके हैं। 'रिमझिम', 'संचयन' और 'अनागत', काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। पता है, मानसरोवर, गया।

उड़िया

कवि : डा० मायाधर मानसिंह

रूपान्तरकार : श्री प्रभाकर माचवे

पुरी ज़िले में पारिकुड में १३ नवम्बर १९०५ को जन्म। पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० करके विदेश गए। इंग्लैंड में डरहैम यूनिवर्सिटी से 'कालिदास और शेक्सपियर' पर प्रबन्ध लिख कर पी-एच०डी० प्राप्त की। संप्रति संबलपुर के गंगाधर मेहेर कालेज के प्रिंसिपल। प्रकाशन : धूप, हेमशस्य, जीवन-चिता, बापू-तर्पण, जेमा, कोणार्क, अख्यत आदि काव्य; बाराबाटी, पुजारिणी, पुष्पिता, दुर्भिक्ष (पद्य-नाटिकाएं); कमलायन (आख्यान-काव्य); शिक्षा, शिक्षक, शिक्षायतन; साहित्य ओ समाज; कवि ओ कविता; बुद्ध (गद्य-ग्रंथ); नष्ट नीड (नाटक); अन्वेषण (उपन्यास) तथा उड़िया ज्ञानकोश के प्रथम भाग का संपादन। साहित्य अकादेमी के उड़िया सलाहकारी बोर्ड के प्रमुख हैं।

★

छबिश जानुआरी

जननी भारत,
तो माटिरे गणराज्य पुनरुत्थानर,
स्मारक दिवसे आजि करे नमस्कार।

स्नेहमयी त्रिंशकोटि सन्तान जननी,
कल्याण करुणामय तोर पक्षपुटे,

सहस्र वर्षर घोर दुर्दिन संकटे
शत शत आक्रमणु, साम्राज्यर उत्थान पतने
वंचाइकि रखिथिलु एइ तोर अरक्ष जातिरे,

गहन अन्तरे

गोपने साइति रखि एहि महास्वप्न
निजपुत्रकन्याकर गणराज्य, स्वराज्य संभोग
हेब दिने पुनर्बार, इतिहास प्रथम दिवसे
तुहि येबे ठिआ कलु आद्ये तोर शान्त गृहस्थालि
हिमाचल पाद तले,

श्रेणीहीन, भयहीन, नरपतिहीन
जीवन संभोगकारी साम्यतन्त्रराज्य
गढ़ि उठिथिला येन्हे एइ तोर आपणा माटिरे ?
आजिर ए नब गणतंत्र
जननी स्वरूप तोर बहुयुग परे
स्पष्ट प्रकटित येन्हे स्वाधीन ए देश,
सात्विक गौरबमय दीर्घ तोर अन्तरर गाथा
आजि मोर प्राण प्राणे बहे येन्हे काल प्रतिलोमे ।

समयर शत घन प्रस्तर प्राचीर
भेदि एइ स्पष्ट येन्हे शुणिबाकु पाए

कधोपकथन,
महेन्द्र दरीर घाटे सिन्धुनद जले
आसुर वणिक साथे, द्राविड योगीर ।

पुणि कर्ण बाजे
शतद्रु पुलिने आर्य ऋषि बिम्बोष्ठरु
प्रभाते उत्थित सामगान सुगम्भीर

तपोमग्न थिल रहि सेहि द्वइ वरपुत्र लागि
मातृ प्रिय, भ्रातृ प्रिय, गुणहृद सम्राट याहांक
त्यागपूत, शुभंकर स्वार्थहीन पुन्य परशरे
घटि अछि एइ एक जन्मे,
जन्मान्तर मोह परि कोटि जीवनर
आणि ले आमुकु येहु अन्धकारु उन्मुक्त आलोके
मिथ्यारु सत्यरे पुणि मृत्युरु जीवने ?
पुन्यस्पर्शे बापूजीर जड़ कोटि कोटि
हेले क्षुब्ध प्राणवन्त, नव सचेतन
मानविक अधिकारे ।

बापू जीर पछे,
निर्माता नेहेरू
धीरे करे से विराट जाग्रत गणरे
समृद्ध श्रीमन्त, निज पुरातन भूम,
विश्वजाति मेले पुणि वरेण्य शरेण्य
सम्मानित शत्रु बोलि पर शासनर
ए धरार सकल प्रान्तरे,
बंधु श्रेष्ठ, पर पीड़ितर ।
तोर स्वप्न अनुयायी, तोर प्रिय संतान गठित
येणु एहि भारतर नवगणतंत्र ।
ताहार स्वाधीन प्रजा, आजिर ए स्मारक दिवसे
प्रेरिवाकु चाहें तार समजने ए धरार सकल देश रे
सेहिनोर वाणी सनातनी
सौहार्द्यर सहावस्थानर ।
आस चीन, आस बर्मा, आस हे निप्पन,
आस युरो-आमेरिका, आस सोभियेट
बुद्ध-गान्धी-पूत एहि अबैर माटिरे
अन्योन्य-वैरता तेजि, महामानवर
ए महामिलन भूमे मिलबन्धु सम ।

जननी भारतवर्ष खोलिछि ता द्वार
शत्रु, मित्र, यिए येवे असि अछि एथि
मानवर इतिहासे शुणाइ प्रथमे
मानवर चारिपाशे देव अधिष्ठान ।

आसे पुणि शान्त क्षुद्र अरण्य कुटीरु
विराट रसाल महा कवितार ध्वनि
षौरुष ओ नारीत्वर महा अभिनय
निखिलजातिर मर्म गभीर काहाणी
रामसीता कृष्णार्जुन द्रौपदीर कथा ।

पुणि शुण, शुण विश्व जने
राजपुत्र फिंगिदेइं सकल विलास
मानवर मुक्तिपाइ वरि कृच्छ्र पथ ।

धर्मचक्र-प्रवर्तन मृगदाबबने
एइ करे, व्याख्या करि जनतार भाषे
महाधर्म, सत्य, न्याय, प्रज्ञा, करुणार
या कल्याण उर्मि
प्रसारित करिअछि आलोक, संस्कृति
धरणीर देशे देशे, कोटि कोटि जने
देखाइ सरल पन्था महाजीवनर ।
जननी, अतीतपरि तो शत बोइत
पुणि यिब घाटे घाटे सात समुद्रर
पहंचाइ देशे देशे सेहि तोर बार्त्ता सनातनी,
जीवन आनन्दमय, जीवन पवित्र
जन्तुर स्वभाव हिंसा, नुहे मनुष्यर
हत्यारु आश्रय बढ, बैररु मित्रता
वर्ण-निर्विशेषे
ईश्वर आसीन प्रति नर हृदयरे
सत्य एक,
भिन्न उच्चरित याहा प्रचारक मुखे ।

सहस्र वर्षर सेहि घोर दुर्दिनरे
तमेकिमा आपणार निगूढ़ अन्तरे
मुक्त हस्ते देइ अछि प्रकुण्ठ आतिथ्य
पररे करिछि निज विदेशीरे देशी ।
तेणु मुं गर्वित याहा धमनीरे मोर
बहे सर्व रक्त धारा ।
श्वेत, कृष्ण, हरिद्रादि सकल चर्मर
द्राविड, अष्ट्रिक, आर्य, मंगोल, टिब्बेटे ।
सकलर उपादाने मो देह गठित
विश्वमानवर
गर्वित प्रतीक मुंहि, मुक्त भारतर
साधारण नागरीक
बद्ध परिकर पुणि थापिवाकु लोकमत परं
ग्रामराज्य, गणराज्य, श्रेणीगोष्ठीहीन,
उच्चनीच-लज्जाहीन, शोषण विमुक्त ।
परस्पर हिंसा ईर्षा अविश्वास तेजि
शुण विश्व बन्धुगण, वाणी भारतर--
बंधुतार, अहिंसार विश्वकल्याणर ।

★

छब्बीस जनवरी

भारत जननी ! तेरी मिट्टी में गणराज्य पुनर्वार
स्मारक दिन पर करता हूँ मैं नमस्कार !
स्नेहमयी ! तुम तीस कोटि सन्तानों की हो जननी
कल्याण-करुणामयी ! तेरे पक्षपुट में
सहस्रों वर्षों के दुर्दिन घोर संकट में
शतशत आक्रमणों में, साम्राज्य उत्थान-पतन में
गहन अन्तर में छिपा रखा था क्या यह महास्वप्न
निज पुत्रपुत्रियों का गणराज्य होगा स्वराज्य पुनः

जैसा इतिहास के शुरू में हिमालय के तले
श्रेणीहीन भयहीन भूपहीन साम्यतन्त्र-राज्य
तेरी ही मिट्टी में कभी गढ़ उठा था।

आज गणतंत्र में पुनः वही गाथा
स्पष्ट प्रकटित है सात्विक स्वाभिमान भरे अन्तर की
समय के शतघन प्रस्तर प्राचीर चीर
सुन पाता स्पष्ट वही संलाप :
महेन्द्र दरीघाट पर सिन्धुनदी के किनारे
आसुर वणिक के संग द्राविड उस योगी का
पुनः सुना आर्यऋषि-ओष्ठ से उठा हुआ
शतद्रु-पुलिन पर सामगान सुगंभीर।

मानव-इतिहास में पहले-पहले सुना
मानव के आसपास देवता का अधिष्ठान
पुनः शान्त छोटी-सी वन की कुटिया से उठी
विराट रसाल महाकाव्य-ध्वनि
पौरुष औ नारीत्व के वे महानाट्य
निखिल जाति मर्म भरी कहानियाँ :
राम-सीता-कृष्णार्जुन-द्रौपदी की कथा !

सुनो सुनो विश्वजन, पुनः सुनो
राजपुत्र सब विलास तजकर
मानव की मुक्ति के लिए विरक्त बनता
धर्मचक्र-प्रवर्तन मृगदाव वन में
करता है व्याख्या, करता है जनभाषा में !
महाधर्म सत्य, न्याय, प्रज्ञा, करुणा की कल्याणोर्मि
प्रसारित करता है देश देश आलोक-संस्कृति
सरलपंथ महाजीवन का दिखा पथ !

जननी ! अतीत की ही भाँति तेरे शत जहाज
पुनः घाट-घाट सात समुद्रों के पार आज
देते हैं संदेश—"जीवन आनन्दमय, जीवन पवित्र है !
हिंसा तो पशु स्वभाव, नहीं है मनुष्य का,

हत्या नहीं, रक्षा बड़ी, वैर नहीं, मित्रता;
वर्ण-निर्विशेष प्रति-जन में है ईश्वर।
सत्य एक, प्रचारक मुख से भिन्न उच्चारित।"

मां ! ये ही तेरे दो वर पुत्र पुनः आयें,
इसी प्रार्थना में ये हजारों वर्ष तम के क्या बिताये तूने !
ये जो तुझे 'मृत्योर्मामृतंगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' ले जायँ !
बापू जी के पुण्य-स्पर्श से कोटि जड़ बने चेतन
प्राणवन्त मानव-अधिकारमय !
बापू जी के बाद, निर्माता नेहरू धीरे से जागृत करता है यह विराटगण
समृद्ध, श्रीमंत पुरातन भूमि में,
विश्वशांति फिर से वरेण्य बना !
सब प्रकार के परपीड़न बुरे, बंधु सारे जन।

तेरे स्वप्न-अनुयायी ! तेरी प्रिय जनता यह गठित कर,
बना नया भारत का गणतंत्र
तेरी स्वाधीन प्रजा, आज इस स्मरण-दिन
चाहती है फैलाना सौहार्द्र, सहास्तित्व,
आओ चीन, आओ बर्मा, आओ हे निप्पौन
आओ युरो अमेरिका, आओ सोवियत जन
बुद्ध-गांधी-पूत इस निर्वैर मिट्टी में
अन्योन्यवैर छोड़, महामानवों के इस महामिलन तीर्थ में
आओ मिलो बंधु बन।

भारत-जननी ने किये सबके लिए द्वार खुले
शत्रु मित्र बाहर हों, यहां सब एकसार
मुक्तहस्त देती है अकुंठातिथ्य वह
पराये को अपना बनाती, विदेशी को देशी।

इसीलिए गर्वित हूँ, मेरी धमनी में सर्वरक्तधारा बहती है,
श्वेत, श्याम, हरिद्रादि सारे चर्म में है :
द्राविड़ हो, आस्ट्रिक हो, आर्य-मंगोल-भोट
सबके उपादान से है देह गठित विश्व-मानव की,
गरबीला मैं प्रतीक स्वाधीन भारत का साधारण नागरिक !

करता हूँ प्रण इस दुनियां में ग्रामराज
बनाऊंगा श्रेणी-गोष्ठीहीन, उच्चनीच-भेदहीन, शोषण-विमुक्त
हिंसा-ईर्षा-अविश्वास-त्यक्त, सुनो विश्व बंधुगण, भारत की वाणी
बंधुता, अहिंसा, विश्वशांति की कल्याणी !

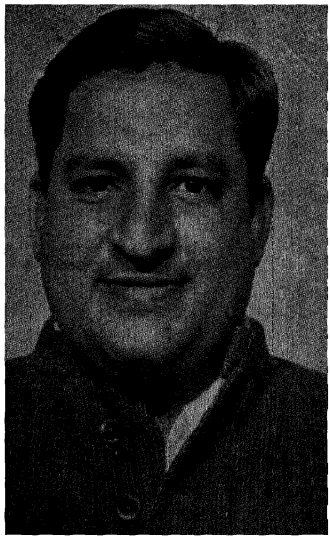

श्री प्रभाकर माचवे

जन्म १९१७ में ग्वालियर में। शिक्षा : आगरा से दर्शन और अँगरेज़ी में एम० ए०। माधव कालिज उज्जैन में ११ वर्ष तक प्राध्यापक रहे। उसके बाद ६ वर्षों तक आकाशवाणी में काम किया। आजकल साहित्य अकादेमी के सहायक-मंत्री हैं। लिखना सन् १९३४ में शुरू किया। हिन्दी और मराठी में समान-रूप से लिखते रहे। अबतक परंतु, एक तारा, द्वाभा, साँचा (उपन्यास), ख़रगोश के सींग (निबंध-संग्रह), समीक्षा की समीक्षा और व्यक्ति और वाङ्मय (आलोचनात्मक निबंध) आदि पुस्तकों की रचना कर चुके हैं।

उर्दू

कवि : श्री रविश सिद्दीकी
रूपान्तरकार : श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव

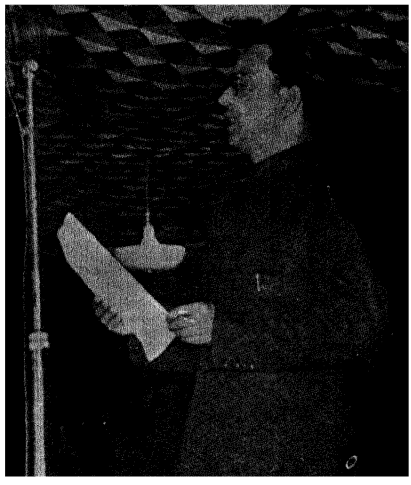

नाम शाहिद अज़ीज़ अहमद 'रविश'। सिद्दीक़ी वंश के हैं। जन्म १० जुलाई १९११, जन्मस्थान ज्वालापुर। पिता मौलवी तुफ़ैल अहमद शाहिद भी कवि हैं और उन्हीं से 'रविश' साहब ने काव्य-दीक्षा प्राप्त की। क़ुरान मजीद और फ़ारसी की शिक्षा घर पर प्राप्त की, बाद में अंग्रेज़ी और हिन्दी स्वयं सीखी। ७ वर्ष की अवस्था से ही कविता करना आरंभ किया। गज़ल और नज़्म—दोनों ही क्षेत्रों में आपका ऊँचा स्थान है। उनकी रचनाओं में अब तक 'कारवां' और 'मेहराब ग़ज़ल'—यह दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

★

योमे जमहूर

वक़्त की मसीहाई, ले रही है अँगड़ाई
ज़ह्र चश्मे ख़ूबां में।
ज़िंदगी पलट आई, साज़े आरज़ू लेकर
बज़्मे नाज़े जानां में।

रगोबू के ख़्वाबों का, कारवाने बेपरवा
हर मुक़ाम से गुज़रा।
ख़माज़न हुआ आख़िर बूए आशना पाकर
हिंद के गुलिस्तां में।
ज़िंदाबाद परवानो, ख़ूने दिल से रौशन की
तुमने शमये आज़ादी।
आफ़रीं है दीवानो, लाये तुम बहारों को
दश्त से गुलिस्तां में।
तोड़कर दरे ज़िंदां, अम्न के फ़िरिश्तों को
बालो पर दिए हमने।

रोशनी मिली हमसे, दोस्ती के साहिल को
दुश्मनी के तूफ़ां में।
सोज़े दिल की बेदारी, एक दलील रौशन है
सुब्ह कामरानी की।
तीरगी का शिकवा क्या, रात भर की मेहमां है
सायए चिराग़ां में।
ज़िंदगी ने समझा है, राज़े जन्नते आदम
दर्दे आशना बनकर।
ख़ुल्द जाविदानी की, राहतें सिमट आईं
आज दर्दे इंसां में।
ज़िक्रे लालए गुल क्या, ख़ाक मेरे गुलशन की
हासिले बहारां है।
सब अज़ीज़ हैं मुझको, फूल हों कि काँटे हों
दामने गुलिस्तां में।
नौ-ब-नौ यह रंगीनी, चेहरए गुलफ़शां की
जज़्बे शौक़ है शायद।
हम नशीं बता कब थी, ख़म-ब-ख़म यह बेताबी
गेसुए परीशां में।

रस्मो राहे महफ़िल से, आपको कहां निस्बत
कुछ तो ऐ रविश कहिए।
किस की जुस्तजू आखिर, आज खींच लाई है
महफ़िले निगारां में।

★

गणतंत्र-दिवस

आज सुन्दर नयनों के हलाहल में युग का अमृत-तत्व स्पंदित हो उठा है, जीवन नव-आशाओं की वीणा लेकर सौंदर्य की रूप-सभा में पलट आया है।

रंग और सुगंध के स्वप्नों का निर्द्वन्द्व कारवां हर मंजिल को सगर्व ठुकराता हुआ बढ़ा जा रहा था। यकायक मानो अपने सुहृद की सुपरिचित सुवास ने उसे रोक लिया—ठहरो, भारत-उपवन ही तुम्हारा विश्रामस्थल है।

शहीदों, तुम अमर हो, तुमने पतिंगों की भाँति अपनी बलि देकर स्वतंत्रता की ज्योति जगाई है, तुम धन्य हो, तुम वसंत को वनों से खींचकर उपवन में ले आए हो।

कारागृहों को तोड़कर हमने शांति के देवदूतों को पंख प्रदान कर दिए हैं, हमारे प्रयत्नों से शत्रुता के तूफानों के अन्धकार में मित्रता के शांत कूल जगमगा उठे हैं।

हृदय का यह जाग्रत उत्साह हमारी सफलता के आगामी प्रभात का ज्वलंत प्रमाण है; उज्ज्वल दीपों की छाया में रेंगते हुए अन्धकार की बात छोड़ो। नव प्रभात के आते ही वह स्वयं ही विलीन हो जायगा।

आज जीवन ने इस असीम रहस्य को जान लिया है कि मानवता की वेदना में ही धरती का स्वर्ग छिपा हुआ है। देवलोक का समस्त सुख-विलास आज मनुष्य के हृदय का दर्द बन गया है।

लाला और गुलाब की तो बात ही क्या, आज मेरे उपवन की धूल भी वसंत के मस्तक का चन्दन बन गई है, मुझे अपने उपवन का सभी कुछ प्रिय हैं—फूल भी और काँटे भी।

नव विकसित फूलों की तरह प्रतिपल मुस्कुराता हुआ यह सौंदर्य शायद मेरे ही आकर्षण का रूप है। मित्र! क्या इससे पहले भी बिखरे हुए बालों के अधीर सौंदर्य का ऐसा स्वप्न किसी ने देखा था?

शिष्टाचार-प्रदर्शन पर गर्व करती हुई इन सभाओं से तुम्हारा क्या सम्बन्ध? ऐ 'रविश'! कुछ तो कहो आज तुम किसको ढूंढते हुए इस सौंदर्य-लोक में आ निकले हो?

कन्नड

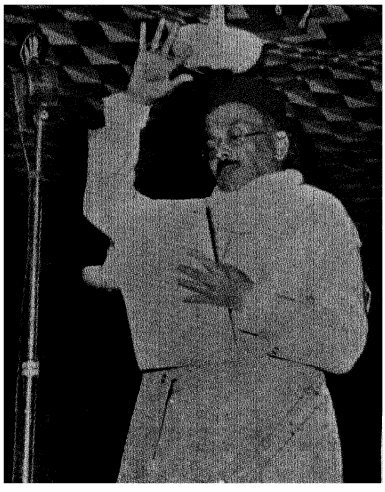

कवि : श्री द. रा. बेन्द्रे
रूपान्तरकार : श्री नरेन्द्र शर्मा

धारवाड में ३१ जनवरी १८९६ में जन्म। बंबई से एम० ए०। धारवाड के राष्ट्रीय विद्यालय के संस्थापक। 'स्वधर्म', 'जय कर्नाटक' और 'जीवन' के संपादक। 'गेलेयर गम्पु' (मित्र-गोष्ठी) के सदस्य। १९३२-३३ में जेल-यात्रा; '३२से '४० तक ब्रिटिश नौकरी से वंचित। १९४८ के बाद मराठी में भी लिखने लगे। १९३० (मैसूर) में तथा १९३५ (बंबई) में काव्य-विभाग के अध्यक्ष तथा शिमोगा के कर्नाटक साहित्य सम्मेलन के सभापति। १९५५ में 'होस संसार' नाटक पर प्रथम पुरस्कार। आठ कविता-संग्रह, दो एकांकी संग्रह, पांच समालोचना के ग्रन्थ, तथा प्रो० रानडे के 'उपनिषदों के रचनात्मक सर्वेक्षण' तथा अरविन्द के 'भारत में पुनर्जागरण' के अनुवाद के प्रणेता। पता : नीलनगर, शोलापुर। साहित्य अकादेमी के कन्नड सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं।

★

नूतन चेतना

पुरातनऊ चिरनूतन ।
भारत मातेय चेतन ।।पुरा०।।

असुररिंदा भूभारवागे । सम
हारभाव संचारगोंडु । नव
धर्मवन्नू सुस्थिरवगो लिभें । अव
तार बागि श्रीरामकृष्ण रोलू ।।

इलेयोलगिलि दद्दु ।
मूर्तिया इदु निर्भनिन ।
भारत मातेय चेतन ।
पुरातनवु नवनूतन ।।

हिमसेइंद कत्तिरिस प्राण । का
रुण्य वर्ष अनवरत दान । वेने
वर्धमानविदु महावीर । रोलु
लोकाग्रते येरिद्दु मत्ते ।। तावे

सत्यपथव हिडिददु तानु । दी
नरिगेदुडीदु मडिदिद्दु कूड । तं
तन्नवरिंदेदे गुंडिगेसिडि । दू
राम नाम जवि सुत्तालहिम ।। सेयू
करुनेगे मडिदिद्दु ।

भारत भाग्य विधातन ।
भारत मातेय चेतन ।
भव्यवु दिव्यवु नूतन ।।

सहस्रविन्दाक्षरदल्लि । प्र
त्यक्ष विद्दु विज्ञान दीक्षे । पडे
दिद्दु ईक्षणकु मौन मुद्रे । यलि
संतत कृपेयलि समाधितवु ।। ता
माडदे इदे सद्दु ।

हृदय पुरुष संजातन ।
भारत मातेय चेतन ।
पुरातन वे चिर नूतन ।।

शास्त्र शस्त्र सम्पन्न भुवन । वा
शिवन मरेतु यमभवनदंते । भण
गुद्दतिरलु सारुत्त बन्तु । सह
जीवन मत्रव पठिसुत्तना ।। दा
रिद्रयदि मुलु गिद्दु ।

जितन ओडनये चेतन ।
ओलि सुवदे नव नूतन ।
भारत मातये चेतन ।।

लोकवा गिद्ददु ।
निलिसितु शांतिय केचन ।
भारत मातये चेतन ।
चिरंतन वु चिर नूतन ।।

कनसु कंडु कंग्गेट्टु कुरुडि । नला
हुरुडिनिंद नाडेदिरलु जगवु । ता
सुप्तित्वरद प्रज्ञप्ति यागि । निज
साक्षीयन्ते ताटस्तया दल्ले ।। धन

बुद्ध रोलेद्ददु ।
शून्य दाचे सम्भूतन ।
भारत मातेय चेतन ।
पुराणवेन्दरु नूतन ।।

★

नूतन चेतना

भारत का चैतन्य तत्व प्राचीन, किन्तु नित नूतन !
हिंसा के उत्पातों से जब भूमि-भार बढ़ जाता,
आते तब संहार-भाव ले असुरारी भव-त्राता,
भारत की निर्भीक चेतना राम-कृष्ण-संकर्षण।

हिंसा के हाथों उत्पीड़न बढ़ा, प्राण घबराए;
वर्धमान करुणाधन बन कर महावीर तब आए,
मैत्री के ध्वज में फहराया फिर भारत का चेतन !
स्वप्न सृष्टि को सत्य मान, अभिमान बढ़ा जाता था,
अहंबुद्धि को देह गेह की निद्रा से नाता था,
हुआ दीप्त तब महाबोधि से महाशून्य का आसन !
रक्त-स्वेद-सिंचित-सत्याग्रह-पथ पर बढ़े निरन्तर,
सह हिंसा की घात, अहिंसा-मंत्र विश्व को देकर,
कर चेतन को प्रकट, गए कर आत्मोत्सर्ग महात्मन् ।
शस्त्र-शास्त्र-संपन्न विश्व ने है शिव को बिसराया,
शस्य-श्यामला वसुंधरा पर आज मृत्यु की छाया,
पर विपन्न यह देश कर रहा विश्व-शान्ति-संवर्द्धन ।
दश दिशि में शत शत दल खोले है अरविन्द सुशोभित,
समाधिस्थ विज्ञान, नयन ध्यानस्थ, मौन में लय नित,
कोलाहलमय विश्व करेगा कल जिसका आवाहन !

श्री नरेन्द्र शर्मा

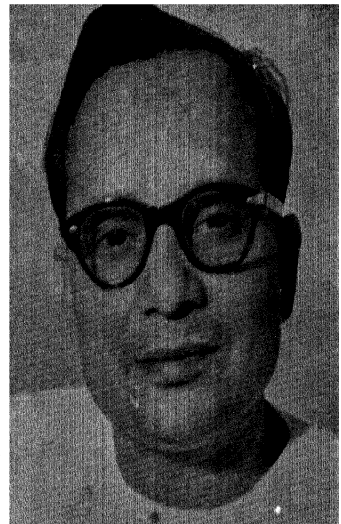

जन्म सन् १९१३, जहाँगीरपुर, ज़िला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश। शिक्षा: प्रयाग विश्वविद्यालय से एम० ए०। सन् १९३७ में 'भारत' के सह-सम्पादक के रूप में कार्य किया। सन् १९३८ से ४० तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय से संबद्ध रहे। सत्याग्रह-युद्ध में सन् १९४०-४२ में कारावास गये। सन् १९४३ से १९५३ तक बंबई में फ़िल्मों में गीत तथा संवादलेखन किया। आजकल आकाशवाणी दिल्ली के प्रसार-संगीत का निर्देशन कर रहे हैं। काव्यसंग्रह प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, पलाशवन, कामिनी, मिट्टी और फूल, हंसमाला, रक्तचंदन, अग्निशस्य और कदलीवन। कहानी-संग्रह कड़वी मीठी बातें प्रकाशित हो चुके हैं।

कश्मीरी

कवि : श्री रहमान राही

रूपान्तरकार : डा० हरिवंशराय बच्चन

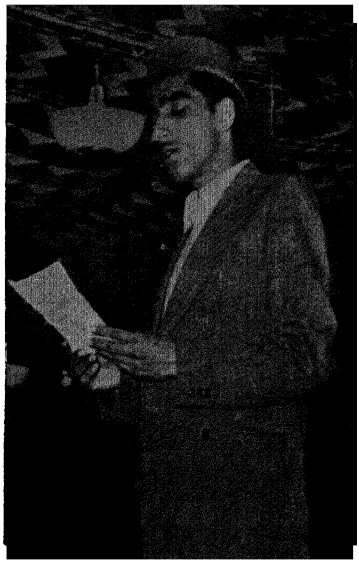

श्रीनगर में ६ मई, १९२५ को जन्म। १९५१ में जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय से फ़ारसी में एम० ए० किया। इस समय वहीं फ़ारसी तथा उर्दू के अध्यापक हैं। 'सनव्यिन साज़', 'सुभुक सौदा' तथा 'यिमसान आलव' कश्मीरी पुस्तकों के रचयिता। कश्मीर की कल्चरल कान्फ्रेंस द्वारा प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'कांगपोश' के संपादक। आपके अधिकांश गीत कश्मीर की जनता तथा लोकतंत्र के पक्ष में किए गए प्रयास के संबंध में हैं।

★

मगर व्यथ मा छः शोन्गिथ

च़ कव छक शाम लोट अख़ताब लूसिथ वोश हैवान त्रावुनि।
मे वुनमै बारहा सुबहस छ़ थनु प्योन ज़िंदगी प्रावनि।
च छी वुनि चिथर डीशिथ सर्द भागुकि दाग बै पावान।
म्य छुम सोंतुक ख़यालइ हावसन हुन्द बाग फोल रावान।

म वनतम ज़िंदगी छा पेन्जि कुनि प्यठ ज़ाह क़रार आमुत ।
च प्रिछ़ आरन कोलन जांह मंज़िलन मा छु शुमार आमुत ।
च है पाने वुछुत मंज़लिक गबर मा मंज़िलिनइ रोज़ान ।
छु मोसुम पाज़ फरिसई तल वुफान शेछ संगरन सोज़ान ।
छी कात्याह क़ैद हेमतस काम ह्यथ अज़ ब्रेडि फुटरावान ।
बेकस रातिक छि अज़ याशा करान शाहन पथर पावान ।
यि असि यव चव वोनि मा है कि कांह सु ज़ुलमुक ज़हर असि चाविथ ।
दो है मा युंदि हेकन सान्यन इरादन मूल अलराविथ ।
ख़बर छम वुनि छि केहं बदख़ाह यछ़ान लोलस थवुन पाबंद ।
छु ट्योठ बासान कंचन जाहिलन सान्यन कथन हुन्द कन्द ।
ख़बर छम ज़िंदगी छुन चानि हुसनुक रंग वुनि आमुन ।
छि शोकस वुनि स्यठाह ठरि वारु छुन लंजि बामुनाह द्रामुन ।
मगर व्यथ मा छे शोंगित वख छु असि सीत्यन दवान दौरान ।
संगर मालन छि बुठ गुमनान न गठ कारस छ सथ सोरान ।
बो ग़यब दोहदिश ग़ज़ल हुसनुकि वुनि छै लोलस नज़र थावुनि ।
च कव छख शामलटि अखता बलूसिथ वोश हेवान त्रावुनि ।

★

सोता है संसार नहीं

अंधकार को देख रक्त के आँसू व्यर्थ बहाता है,
फिर कहता हूँ सब तम कटता जब कि सवेरा आता है,
ओ बहार तूने तुषार का ओढ़ कफ़न क्यों रक्खा है ?
मेरे दृग का स्वप्न बसन्ती दृश्य नए दिखलाता है;
फिर करती शृंगार मही,
सोता है संसार नहीं।

जीवन की गति रोके, सागर नापे, किसमें क्षमता है,
मीलों के पत्थर थक जाते, किन्तु रास्ता रमता है,
नई जवानी के कंधों पर डैने उगते नए नए,
बाज़ नौड़ से उड़ता है तो चोटी पर ही थमता है;
गति रखती मँझधार नहीं,
सोता है संसार नहीं।

ताक़त वाले आज हाथ की हथकड़ियां तड़काते हैं,
कल के निर्बल आज सबल शाहों के तख्त हिलाते हैं;
किसकी हिम्मत आज पिलाए ज़हर पिया जो कल हमने,
हम दीवारें हैं जिनको सैलाब सलाम बजाते हैं;
छूती हमको धार नहीं,
सोता है संसार नहीं।

ज़ंजीरों में बांध मुहब्बत को मत रक्खो नादानो,
भाईचारे में जो मीठापन है उसको पहचानो,
अभी ज़िन्दगी की पंखुरियां अगनित खुलने वाली हैं,
खिलने को हैं फूल अभी बहुतेरे, इसको सच मानो;
बीती अभी बहार नहीं,
सोता है संसार नहीं।

जो सोता है नहीं, हमारे साथ समय की धारा है,
मुसकाती है सुबह, अंधेरे का होता निबटारा है,
मैं सुन्दरता के क़दमों में गीत बिछाता जाऊँगा,
सुनो, प्यार से कितने मैंने तुमको आज पुकारा है;
डरने की दरकार नहीं,
सोता है संसार नहीं।

★

डा० हरिवंशराय बच्चन

जन्म १९०७ में, इलाहाबाद में हुआ। प्रारम्भिक संघर्षपूर्ण जीवन झेलकर विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा प्राप्त की; फिर लगभग दस वर्ष तक प्रयाग विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग में अध्यापन-कार्य किया। इसी बीच इंग्लैंड जाकर कैम्ब्रिज की पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। स्वल्प काल के लिए आकाशवाणी में हिन्दी निर्देशक रहे। आजकल विदेशकार्य-मंत्रालय में विशेष अधिकारी हैं। मधुशाला द्वारा सर्वप्रथम लोकप्रियता मिली। उसके बाद मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, मिलन-यामिनी, बंगाल का काल, खादी के फूल, सूत की माला आदि कविता-पुस्तकें प्रकाशित हुईं। नया संग्रह 'प्रणय-पत्रिका' अभी प्रकाशित हुआ है। पता: विदेशकार्य मंत्रालय, केन्द्रीय सचिवालय, नई दिल्ली।

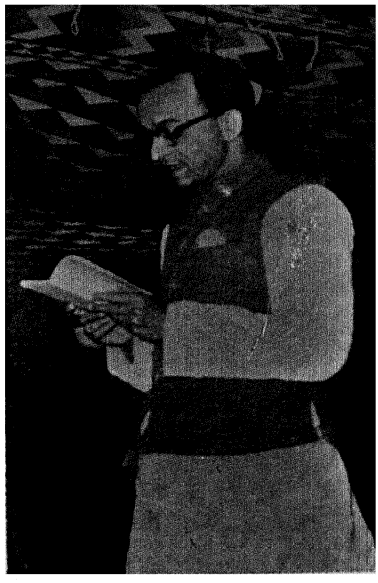

गुजराती

कवि : श्री उमाशंकर जोशी
रूपान्तरकार : श्री नरेन्द्र शर्मा

बामना, साबरकांठा (उत्तर गुजरात) में २१ जुलाई १९११ में जन्म। १९३८ में एम० ए०। विद्यार्थी-जीवन में असहयोग आंदोलन में भाग लिया। १९३० से ३४ के बीच दो बार जेल-यात्रा। १९ ७ से १९४६ तक शिक्षक तथा प्राध्यापक रहे। १९४७ से 'संस्कृति' पत्रिका के संस्थापक सम्पादक। १९५४ में 'गुजराती भाषा भवन' के प्रमुख। १९३९ में 'निशीथ' पर रणजीतराम सुवर्णपदक मिला; १९४५ में महिंद पारितोषिक तथा १९५३ में नर्मद सुवर्ण-पदक 'प्राचीना' पर मिला। प्रकाशन : विश्वशांति (१९३१); गंगोत्री, निशीथ, आतिथ्य, वसंतवर्षा आदि काव्यसंग्रह; सापना भारा (ग्यारह एकांकी); श्रावणी मेलो (कहानियाँ); अखो—एक अध्ययन (आलोचना); प्राचीना (सात संवाद काव्य); पुराणो मां गुजरात (शोध); गुले पोलान्ड-मिस्कियेविच के क्रीमियन सॉनेटों का अनुवाद (१९३९); उत्तररामचरित तथा शाकुन्तल के समश्लोकी अनुवाद। पता: 'संस्कृति', अहमदाबाद-६। साहित्य अकादेमी के गुजराती सलाहकार बोर्ड के प्रमुख तथा कार्यकारिणी बोर्ड के सदस्य।

★

विश्वशांति

त्यां दूरथी मंगल शब्द आवतो
शताब्दिओनां चिरशांत घुम्मटो
गजावतो चेतनमंत्र आवतो।

प्रकाशना धोध अमोघ झीलती,
धपे धरा नित्य प्रवासपंथे
झूमो रही पाछल अंधकारनी
तूटो पडे भेखड अर्ध अंगे।

विराट खोली निज तेज आंख
कल्याणनो मंगल पंथ दाखवे
ओ तेज पीने निज सृष्टि खीलनी,
जोती घडी ओ वधतो उमंगे।

अंगे लगाव्या हिमलेप शीला,
ज्वालामुखी किन्तु उरे ज्वलंत,
मैयातणे अन्तर शुं हशे पीडा ?
के सृष्टिचिंता उरमां अनन्त ?

विश्राम काजे विरमे नहीं जरा,
अकथ्य दुःखे अकलाय हैडे
उच्छ्वासथी वादलगोट ऊडे
ने दूर फेले जलनील अंचला।

भमे भमे दुःखतपी वसुंधरा,
डगो भरे तेजपथे अधीरां
ओ तोय पूरा न थया प्रकाश,
अंधारमां आथडी भूतसृष्टि
आ रक्तरंगी पशुपंखी प्राणी
पुकारता सौ नखदंत नाश।

ने लोही पीने उछरेल घेली
आ लाड़िली मानवता धरानी
इतिहासानी भूलभुलामणीओ
रचे, अने कँइ जगवे लडाइओ।

भोली स्वहस्ते निज अंग चीरे
ने भींजती आत्मतणा रुधिरे
जल्या करे चोदिश कोटि क्लेश
शने न ओ आग अबूझ लेश
को सिंचता जीवनवारि संत
तोये रहे पावक ओ धगंत
पेगाम दैवी पयगम्बरो वद्या
शमी न ओ भीषण विश्ववेदना,
त्यां दूरथी मंगल शब्द आवतो
युगोतणी कैंक पडी कतार
आवे ध्वनि ओहनी आरपार
तुं पाप साथे नव पापी मारतो।

ओ मंत्र झील्यो जगने किनारे
ऊभेल योगी पुरुषे अनेके,
आरण्यकोओ ऋषिमंडलोओ
सुणेल बुद्धे इशुओ महावीरे,
न तो य निद्राजड लोक जाग्यां
डूबी गयो मंत्र अनंततामां।
ओ आज पाछो ध्वनि स्पष्ट गाजतो
आ युद्धथाकया जगने किनारे
गांधीतणे कान पड्यो उरे सर्यो,
ने त्यां थकी विश्व विशाल विस्तर्यो

युगो युगोनी तपसाधना फली
जगी महा अन्तरवेदना शमी।

विश्व-शान्ति

वह दूरागत, मंगल-शब्दों की ध्वनि आती,
शताब्दियों के गुम्बद की चिर शांति गुंजाती।

कर अजस्र धारा प्रकाश की आत्मसात् नित
धरा धा रही है प्रवास के पथ पर अविजित।
अंधकार के दूह ढह रहे हैं कगार-से,
पर न रुकी है प्रगति-धार, तम के पहार से!
खुले हुए हैं तेजोमय लोचन विराट के,
दिखें मोड़ जिससे मंगल-कल्याण-बाट के।

तेज-वृष्टि कर पान, सृष्टि हो रही प्रफुल्लित,
देख रही है धरती माता, सुख से प्रमुदित!
शोभित है मां, अंगों पर हिम-लेप लगाए,
अन्तराल में ज्वाला जी की ज्योति जगाए।
क्या जाने मां के मन में क्या पीर समाई?
चिन्ता में है निहित, सृष्टि की सतत भलाई!

है अविराम अथक श्रम अविरत, अकथ पीर है।
किस दुख की अकुलाहट से अंतर अधीर है!
उच्छ्वासों में मँडलाते बादल-दल-मंडल,
अति गति से फहराता पीछे चल जल-अंचल।
भ्रमती है, भ्रमती है, दुख से तपती धरती,
बढ़ती है प्रकाश-पथ पर डग पर डग भरती!
फिर भी भूतल पर प्रकाश पर्याप्त नहीं है!
क्या डगमग-पग भूत-सृष्टि तम-व्याप्त नहीं है?

रक्त-रँगे नख-दंत और पशु-पक्षी-प्राणी!
पली रक्त पर, मत्त मनुज की जाति सयानी!
इतिहासों की भूलभुलइयां रचती आती,
युद्ध ठान कर, युग युग वैर-वह्नि सुलगाती!
अपने अंग चीरती है अपने ही कर से,
रक्त-स्नात अपने ही लोहू के निर्झर से!
कोटि क्लेश की अबुझ आग जलती ही जाती,
संत बचन बरसे, पर शीतल हुई न छाती!

देवदूत आए, लाए संदेश-चेतना,
पर न बुझी ज्वालामय भीषण विश्व-वेदना !

पर दूरागत मंगल-शब्दों की ध्वनि आती,
युग-युग की प्राचीर चीर, संदेश सुनाती—
हनन पापियों का, न करेगा शमन पाप का,
हिंसा से होगा न निवारण विश्व-ताप का।
वह दूरागत, मंगल शब्दों की ध्वनि आती,
शताब्दियों के गुंबद की चिर शांति गुंजाती !

यही मंत्र था, जिसे योगियों ने अपनाया;
क्षितिज-छोर पर खड़े आर्ष ऋषियों ने पाया;
महावीर ने और बुद्ध ने सुना, सुनाया।
मंत्र गया, निद्रालस जग की गई न माया !

पर दूरागत मंगल-शब्दों की ध्वनि आती,
शोणित-नद के तम-पंकिल तट से टकराती।

गांधी के मन-प्राणों में ध्वनि आन समाई !
निखिल विश्व के प्लावन को गंगा बन धाई !
वह दूरागत मंगल-शब्दों की ध्वनि आती,
शताब्दियों के गुंबद की चिर-शांति गुंजाती !

पुण्य उदय हो रहे युगों के, सुफल साधना !
हुई अंकुरित विश्वशांति की पुण्य-कामना !

तमिल

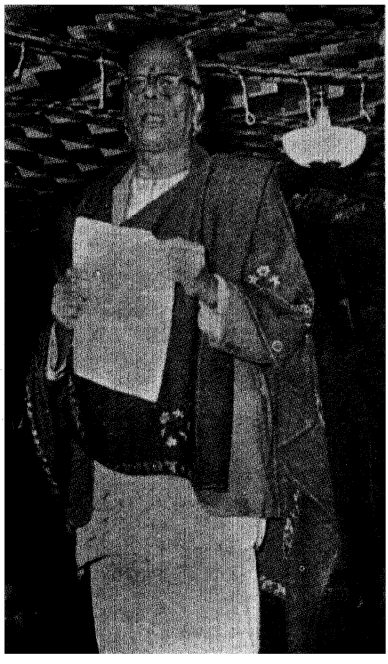

कवि : श्री सुब्रह्मण्य योगी

रूपान्तरकार : श्री सुमित्रानंदन पंत

१९०४ में शंकगिरि, सेलम, में, एक सुविख्यात कवि-घराने में जन्म। आपकी एक प्रसिद्ध काव्यकृति है 'अहल्या', जिसमें विषय का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत है। कविताओं का एक संग्रह 'तमिल कुनरी' प्रकाशित हुआ है। साहित्य पर आपने अनेक विचारपूर्ण प्रबन्ध प्रस्तुत किए हैं। आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। आपने कई फिल्मों के लिए गीत और संवाद लिखे हैं। उमर ख़य्याम की रुबाइयों का आपने तमिल में सुन्दर अनुवाद किया है।

★

वेल्क कालि

अुलकमेन्नुम् अुडलिनुक्कोरूयिराय् निन्ड्राल्
अुण्मैतनक्कुरैविडमायुलकै वेन्ड्राल्
अुलकिनुच्चिमलै अिमयच्चिकरम् पूण्डाल्
अुलवुपल नदिकलिन् मुत्तारम् आण्डाल्

म्रिलकु विन्द्यमामलै उड्याणम् चुट्रि
म्रेलुन्तोडु मेलैमलै च्चेङ्कोल् पट्रि
निलविय मुप्पुरमुम् कडल्पणिय प्पार्त्ताल्
नित्य क्रन्नि भारतत्ताय् कलि कोण्डार्त्ताल्

मुन्न मुन्नम् निनैवदन् मुन्नमे
मुन्नुङ्कोडि प्पल्लायिरमाण्डुकल्
मुन्नमेन्रू पलञ्चेय्ति तेडुवार्
मुडिवु कूरिड क्कूशिडुमुन्नमे
मुन्नमेन्रिडिल् मानिडच्चादिदान्
मुन्नि नाकरिकम् पेरू मुन्नमे
मुन्नैमेयतन् मुन्नमे मुन्नमे
मुदन् मुदल् मक्कल् तोन्रियकालत्ते

म्रातिनालिनिर् पेरिरूलकेङ्गणुम्
म्रडन्तै कारिरूट् कङ्गुलिल् वाल्न्त नाल्
जोति जानक्कदिरवन् कीर्त्तिशै
तोन्रिप्पारतनाट्टिल् ओलिन्र्तनन्
वोतितोरूम् चेलुमरै क्कीतमाम्
वोडुतोरूम् निरैचेल्व क्कूडमाम्
मादरारकल् म्रमैतियिन् वीरमाम्
मान्दर् तेल्लिय चिन्तैयिन् धीरमाम्
रामन् काट्टिय चेन्नेरित्तूय्मैयार्
राजनीति मनुमुरै कण्डवर्
वीमन् तन्द विरल् कोलुम् नेञ्चिनार्
विजयन् नन्दिडुम् विल्लोलि त्तिण्मैयार्
कामन् तन्द कविनुरू मेनियार्
कादल् तन्दिडुम् करपोलि क्कन्नियार्
सामगान च्चङ्गीत क्कडलिनार्
चावुमाडल कोलुम् तिरल् मेविनार्

कण्णनरुल् गीतैनेरि कण्डतिन्द नाडु
करूणैयुरूवाम् बुद्धर् अन्बु कण्ड नाडु
पण्णिलुयर् कालिदासन् पुकलुम् भूमि
पाविलुयरवान्कम्बन् काविय्ङ्कोल भूमि
तिण्णमुरू वल्लुवरिन् चेम्मैयुरूम् देशम्
सीतं कण्णगि यौवै देविकलिन् देशम्
वण्णमिकुवानमुत वाल्वु तनै मुनिवर
मण्णिले कण्डुकलि कोण्ड तिरूनाडु

येन्नाट्टुम मुन्नाट्टुम पोन्नाट्टिन् मेलाम्
येकिल् नाट्टुमिचैनाट्टु मेट्रमेलाम् नाट्टुम्
अिन्नाट्टिन वलङ्क्ण्डुमे नाट्टार् वन्तार्
अ्रेमाट्रि वचै नाट्टि अ्रेमैयाट्टम् कोण्डार्

मालैक्कङ्गुलिन् नाट्टिनर् काट्टिय
मायजालमयक्किल् मयङ्गिये
कालैप्पेरोलिक्काट्चि मरन्दुमे
कारिरूट्टिलडिमै कलाकिनोम्
पालैक्कानल् वलञ्चेय त्तोन्रिये
पारन्द जीव नदियेङ्गल् गान्धियिन्
चीलङ्कूट्टि विड्तल पेट्रनम्
चेम्मैयाङ्कुडियाट्चि वकुत्तनम्
तन्दै चेल्वम् पिल्लै काक्कुम् तन्मैपोल गान्धियार्
तन्द चेल्वम् पाडुपट्टु कात्तिडल् नम् कडमैये

अ्रिनि भेन्नालुमडिमै वाल्विङ्गेय्तिडातवण्णमे
पणिपुरिन्दु पाडुपट्टु भारतत्तै काप्पमे

नेंजिलेन्रूम् पञ्चशीलम् नेरियिलेन्रूम् तूयमैये
वञ्चकङ्गल तुञ्चवाल्विन् माट्चिकाणल् वायमैये

अ्रेट्टुतिक्कुम् वट्रिकोट्ट अ्रेङ्गुमिम्बम् पोङ्गबे
तिट्टमिट्ट चेयल्पुरिन्तु चीर्तिकाणवम्मिने

मक्कलाट्चि मक्कल यारूम् मन्नरिन्द नाट्टिले
मक्कल माट्चि पेट्रू वालमक्कल् यारूम् वम्मिने

तिट्टम्काण लरचियल् चेयलिर्काणल् मक्कले
चट्टम् काण लरचियल् शान्तम् काणल् मक्कले

नोतिकाण्बदरचियल् पुतुमै काणल् मक्कले
पोतम् काण्बदरचियल् पुतुमै काणल् मक्कल

निदि कोडुत्तुम् मति कोडुत्तुम् गति कोडुत्तुम् आट्चिये
विदिवकुत्त वलि चेलित्त विलैवुकाण वम्मिने

वील्ह वील्ह मिडिमैयावुम् वील्ह वील्ह वील्हवे
वाल्ह वाल्ह कुडिमैयाट्चि वाल्ह वाल्ह वाल्वे

भारत माता

है देह विश्व! आत्मा है भारत माता!

यह सत्य-धर्म धारिणी धरा अति पावन,
सब जग को लगती मनोहरा मन-भावन,
विधि नदियों की मुक्तामाला पहनाता!

कटि में करधनी सुशोभित है विंध्याचल
सह्याद्रि-माल का राजदंड है कर-तल,
श्रीचरण चूमता, विनत सिन्धु लहराता!

था वह अनादि-सा आदि, भाव को ऊषा,
भव को न मिली थी जब संस्कृति की भूषा,
तब उदित हुआ रवि यहां स्वर्ण बिखराता!

वन ग्राम, नगर में गूंजीं वेद-ऋचाएं,
हर गृह में दमकीं श्री की दीपशिखाएं,
धृति नारि, धर्म से था पुरुषों का नाता!

हम भ्रमित हुए, अस्ताचल वाले देशों को जब देखा;
अरुणाचल की छवि बनी नयन में धुंधली कंचनरेखा;
तब आया ज्योति-पुरुष बापू, चेतन का सूर्य उगाता !

है राष्ट्रपिता ने सौंपी हमें धरोहर,
अब यह स्वतन्त्रता रहे हमारी होकर;
तुम राष्ट्र-धर्म के और मर्म के ज्ञाता।

श्रम और प्रेम का संबल; शक्ति हमारी !
अपने भविष्य में अविचल भक्ति हमारी !
यह देश मुक्ति के गीत रहेगा गाता !

हो पंचशील प्रतिध्वनित हमारे मन में,
अब सद्विचार, सत्कर्म बने जीवन में,
संकल्पसूर्य से विघ्न-तिमिर छँट जाता !

दश दिशि गूंजा जय-घोष, हृदय हर्षाए।
सहयोग सफल हो, जीवन मंगल गाए।
संयोजन ही जग-जीवन पर जय पाता।

यह लोक-राज्य आलोक-राज्य, जन राजा !
श्रम-सीकर का मणि-मुकुट माथ पर साजा !
जा ! विदा, दैन्य ! मैं गीत विजय के गाता !

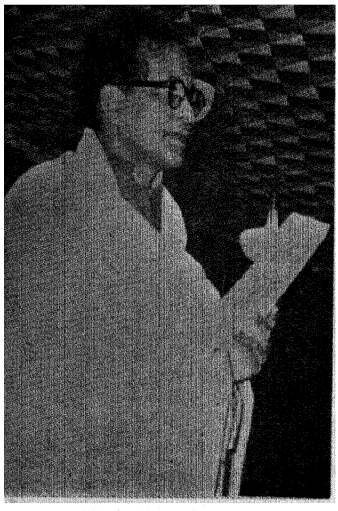

कवि : श्री देवुलपुल्ल कृष्ण शास्त्री
रूपांतरकार : श्री सुमित्रानंदन पंत

पीठापुरम् (पूर्व गोदावरी प्रदेश, आंध्र राज्य) में १ नवंबर १८९७ को जन्म। १९१८ में मदरास विश्वविद्यालय से बी० ए०। कवियों के वंश में जन्म; ब्रह्मसमाज के प्रभाव में समाज-सुधार में सक्रिय भाग। 'साहिती समिति' तथा 'नव्य साहित्य परिषत्' के सभापति; प्रकाशन : कण्णीरु (गीतिकाव्य संग्रह); कृष्णपक्षमु (गीत तथा कहानी-संग्रह); प्रवासमु ऊर्वशी; महर्ता (कविता-संग्रह); कई नाटक। 'भारत-वाणी' चित्र के तेलुगु भाष्यकार। पता : सिमला हाउस, १३३, हबीबुल्ला रोड, मदरास–१७।

★

ई नाडि ई भुवि

चिन नाटि भाव वल्लिनि पूचि नदि, वाडनिदि, वासनलु वीडनिदि।
ओकंडु कोरिक, नाल्गुदिक्कुल भूभुवन मंडलवलेशमुनु
वदलक ये तिरिगि, प्रति गेह गेहालि पदमागि, प्रति हृदय द्वार
तोरण मट्टे द्रोसि लोनिकि जोच्चि, नालोनि स्नेह क्षीर मोक्किंत
ओक्किन्त ओलक बोसि, "अनुगु सोदर, मरलिराना" यटन्सु
सेलवडिगि सागिपोयडु चिर पथिकुडु कावलयुनंत्सु; आश
आकाशमंत, पटिमक्षुद्र विहंग मप्पटिकि, नेडु

घुरुम गंगा झरी धर्म गोदावरी
सिक्त सहजीवनोसक्त भारत भूमि
नोक्कपरि हिमशिखरि नेक्कि, सेतु उदाक
द्रुक्कु सारिंचि, पूरिंचि गलकाहलिक--
विधुरप्रिय श्रवो वीधुल, मंगडस्वादु वाक्यम्मुल नूदगलनु,
निलुप गागलनु माणिक्य दीपावडि, अंध मनोमंदिरांतरमुल,
कर्कश हृदय जांगलमुल, शीतल स्नेह दुग्धम्मु वर्निम्पगलनु,
विरचिपगलनु विद्वेष बंतरिणिकि अड्डुगा गाढ सौहार्दसेतु।
विटनि निलिचि समस्त दिक्तटुल पिलिचि, सारे सारे
जीवत्सरस्वतिनि मलचि कविनि नेनै पुराण वैणविकुनट्लु ऊहलुन्न
जगम्मन्त स्नेहमुन्न।

निन्न मून्ना दाक मन्नुलो
मन्नैयुन्न प्राण
शंख मुत्तिनाडु,
मानवुंडु गर्वमाणिक्य
कोटीरधारि नेडु, विजयहारि नेडु !

ईनाडीभुवि बानिसीडु मरिलेनेलेडु; ओक्कोक्क फालानन--
पावकनेत्र मुन्नदि पगलगाल्पंग ओक्कोक्क डेन्दानन् क्षीरसमुद्र
मुन्न दवधुलाटंग ईमान वुंड निर्मात् विद्रात नेत मरि ताने
भोक्त-लोकम् मुनन्।
स्वस्ति जगत्तुनकगु, श्रीरस्तु सदा शांतिरस्तटन्सु
वेलयु विश्वस्तुत भारत वाणि सुमस्त बकम् बोले
लोक मस्तकमु पइन्।

★

कल्पना और कामना

कोमल लतिका थी बाल-सुलभ कल्पना, हृदय में छाई;
जिस पर अक्षय-सौरभ-स्वरूप कामना कली मुसकाई !
कामना यही थी, देश देश देखूं सँग सँग सौरभ के;
पा सकूं अवनि का आर-पार, छू सकूं छोर मैं नभ के !

प्रत्येक द्वार पर पहुँच सकें मेरे दो पग पथ-चारी;
प्रति द्वार और प्रति हृदय खुले, जा पहुँचे जहां बिहारी !
दूं स्नेह-सुधा, लूं विदा और चल दूं मैं अपने पथ पर;
आकांक्षा का आकाश, भाव आरूढ़ हंस के रथ पर !

वह दिन न रहे अब, किन्तु वही कल्पना कामना मन में;
मैं देख रहा हूं पुण्य-देश भारत रत सहजीवन में !
श्रम-साध्य स्वेद की दिव्य धार बन कर गंगा बहती है;
गोदावरि की हर लहर ज्ञान की गाथाएं कहती है !
मैं देख रहा हूं, तुंग हिमालय-शृंगों पर पग धर कर;
कन्यान्तरीप दूरस्थ, शंख वाणी का अधरों पर धर !

मेरे स्वर में विरहाकुल प्रेमी-जन के प्रति संवेदन,
मेरे गीतों की मंगल-ध्वनि में सबके हित सुख-वर्षण !
है वर्ण वर्ण मणि-दीप, छंद मणि-माला की दीपाली,
मानव के मानस में न रहेगी अब मावस अंधियाली !
मंत्री के शान्तिसुधारस से मैं सींचूंगा मरु-प्रान्तर;
मन जिनका पत्थर से कठोर, कर दूंगा उन्हें सुधाधर !
मैं द्वेष-घृणा के तीरों पर बांधूंगा सेतु प्रीत का,
निर्भीक खड़ा फहराऊंगा मैं उस पर केतु गीत का !

मेरे गीतों में उसी वेणुधर की होगी मधुवाणी,
जिसकी वाणी से निकली थी जीवन-जमुना कल्याणी !
जन आज जनार्दन बना, मृत्तिका पांचजन्य बन जागी !
था जो पाँवों की धूल, बना चंदन उसका अनुरागी !
जय घोष कर रहा मनुज, हुआ अब दसों दिशा उजियाला,
मणि-मुकुट शीश पर शोभित है, उर पर शोभित जयमाला !

अब कौन किसी का दास, मुक्त मानव-समाज के सब जन;
सब के ललाट पर खुला हुआ है वह्नि-नयन रिपुसूदन !
पर जन-जन के मन में असीम अब क्षीर-सिंधु लहराता;
जन ही जीवन का निर्माता, जन अपना भाग्य-विधाता !
जन अपनी जीवन नय्या का नियामक, अपना नेता;
अपने श्रम के मीठे फल का अधिकारी, जीवन जेता

जाबी

कवयित्री :

श्रीमती अमृता प्रीतम

रूपांतरकार :

डा०हरिवंशराय बच्चन

गुजरानवाला (पश्चिमी पंजाब) में ३१ अगस्त १९१९ में जन्म। देश के विभाजन के बाद से दिल्ली के आकाशवाणी केन्द्र से संबद्ध। प्रकाशन : तेरह कविता-संग्रह; तीन कविता-संकलन; तीन बड़े और एक छोटा उपन्यास; दो कहानी-संग्रह; एक जीवनी; एक लोकगीत-संग्रह; पंजाबी साहित्य के विकास पर एक पुस्तक; हिंदी से पंजाबी में अनूदित एक उपन्यास। पंजाबी की लोकप्रिय कवयित्री। पता : ८।२० वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी के पंजाबी सलाहकार बोर्ड की प्रमुख।

★

नवीं सवेर

धरती पासा परतिया, धरती दी एह बात।
सरघी सुक्खाँ भरी वे, अज जशनां वाली रात।
धरती अंगण मौकला, लोक बडा परवार,
भारत पीह्‌डा रांगला, अंगण दे विचकार।
चौदां अंग सहेलियां, उच्चे पीह्‌डे बेहिण,
कक्खीं भाह छुपाइए, लाटां बल बल पैण।
हरफ सुनहरी इन्हां दे, अमन, अहिंसा, त्याग
मसिया वाली रात विच, जग दे जिवें चिराग।
चश्मे वाकर फुट्टदी, इलम हुनरदी तांघ,
सभ्यता ते संस्कृति, चमके सूरज वांग।
नदीआं जीकण सत्तसुरां, धरती जिऊं कोई गीत,
भर भर वंडे चानणां, एह पूर्ब दी रोत।
समा सुनावे बैठ के, एह धरती दी बात,
भारत उते पई सी, सौ सालां दी रात।
परी सुतंतरता दी सुत्ती पलड़े तान,
पंध चीर के पंडचिआ, लोकराज इक ज्वान।
लोकराज शहज़ादड़ा ज्यों ही छोहे अंग,
टुट्टे जादू टूनडे, जागपई ओहदी मग।
करन बहारां चौरियां, चानण धोवे पैर,
लोकराज दे बुत्त दीं, धरती मंगे खैर।
सरघी वेला वेखदा, नवें जुग्गाँ दा मुक्ख,
जीवे फेर मनुक्खता, जीवे फेर मनुक्ख।
आखाँ पूरब देस नूं चानण नवाँ खलेर,
जोवन कर जाए चानणा, एह जु नवीं सवेर।

★

नया सबेरा

धरती करवट ले उठी, धरती की यह बात
आज सुखों का प्रात है, औ जश्नों की रात।
धरती का आंगन बड़ा, बड़ा लोक परिवार,
उसमें रंजित पीठिका, भारत है साकार।
चौदह अंग सहेलियां, उच्च पीठिकासीन,
जिनकी कुंतल-ज्योति को कर न सके तृण क्षीण।
स्वर्णाक्षर में लिख रही, 'अमन', 'अहिंसा', 'त्याग',
जैसे काली रात में जगमग जगे चिराग़।
झरना बन फूटी यहां, ज्ञान कला की प्यास,
संस्कृति एवं सभ्यता का रवि-तुल्य प्रकाश।
नदियां इसकी सप्त स्वर, धरती इसका गीत,
ज्योति लुटाना खोल दिल यह पूरब की रीति।
समय सुनाता बैठकर धरती की यह बात,
भारत पर थी छा गई सौ बरसों की रात।
स्वतंत्रता की थी परी सोती चादर तान,
पंथ चीर पहुँचा वहां लोकराज बलवान।
उस कुमारवर ने छुए ज्योंही उसके अंग,
जगी परी वह कर सभी जादू टोने भंग।
झलती चँवर बहार है, धोता चंदा पैर,
लोकराज के मूर्ति की भूमि चाहती ख़ैर।
आज सवेरा ला रहा नवयुग नवल विहान,
जागे फिर इंसानियत, जागे फिर इंसान।
कहती पूरब देश से, ज्योति नई विस्तार,
जिससे फिर जीवन जगे, करे नया शृंगार।

बंगला

कवि :

श्री बुद्धदेव वसु

रूपान्तरकार :

श्री हंसकुमार तिवारी

कोमिल्ला (पूर्व बंगाल) में ३० नवम्बर १९०८ में जन्म। अंगरेज़ी में एम० ए० तक ढाका में शिक्षा। कलकत्ते में तथा अमरीका में अंगरेज़ी साहित्य के अध्यापक। दिल्ली और मैसूर में प्रौढ़ शिक्षा पर यूनेस्को विचारगोष्ठी के परामर्शदाता। बंगला में गत बीस वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित 'कविता' पत्रिका के संस्थापक-संपादक। निखिल-बंग-साहित्य-सम्मेलन ने आप के 'शीतेर प्रार्थना : बसन्तेर उत्तर' को पुरस्कृत किया। कविता, आख्यायिका, उपन्यास, साहित्य-समीक्षा, रम्य रचना आदि की सौ से अधिक पुस्तकों के प्रणेता। अंगरेज़ी में बंगला साहित्य पर एक ग्रंथ 'ऐन एकर आफ़ ग्रीन ग्रास' के लेखक। बंगला के विख्यात कवि। पता : कविता-भवन, २०२ राशबिहारी ऐवेन्यू, कलकत्ता–२९।

समर्पन

नदीर बुके बृष्टि पड़े
जोयार एलो जले
लुकिये राखा आशार मतो
बांशेर फांके इतस्ततः
एकटि दुटि क्षीन जोनाकि
क्वचित् नेभे ज्वले
आकाश भरा मेघेर भारे
विद्युतेर व्यथा
गुमरे उठे जानाय शुधु
अबोध आकुलता
आकार-हीन हिंस्र खल
अनिश्चित फेनिल जल
मिलिये गेलो अदृष्टेर
मौन इसाराते
तोमाय आमि रेखे एलेम
इश्वरेर हाते ।

ताकिये थाका एकटि दीप
ज्वलछे छोटो घरे
एकटि हात एलिये आछे
कम्पमान बुकेर काछे
छिन्न स्मृति शेलाइ करा
शीतल कांथार परे
मने पडार इन्द्र जाले
झापसा होलो द्वार
आमार हाते लाफिये ओठे
तीक्ष्ण तलोयार
सुदूर काले हारिये जावा
देशान्तरी उठलो हावा
छेलेबेलार गन्ध भरा

अन्धकार राते
आमार प्रेम रेखे एलेम
इश्वरेर हाते ।

पालेर मांझे भविष्येर
गर्भ उठे फूले
अनागतेर रुद्ध चापे
पाटातनेर पांजर काँपे
त्रस्त माछेर अस्थिरताय
गोलुई उठे दुले
कठिन हाते नाविक धरे
आकांक्षार हाल
कपट स्रोते भासे आमार
मृत देहेर छाल
हृदयतले दांडेर टाने
अमर नाम प्रलय आने
ढेउएर आर दिनान्तेर
माताल संधाते
आमार प्राण रेखे एलेम
इश्वरेर हाते ।

उलटो दिके छुटलो आमार
आंधार आराधना
असीम नील घुमेर परे
यन्त्रनाय जडिये धरे
मुक्तिहीन जागरनेर
मूर्ख प्रतारणा
तबुओ आछे एकटि घर
कुंजलताय घेरा
दावाय बसे जटला करे
पुर्व पुरुषेरा

तांदेर मृदु फिशफिशानि,
पड़ुक झरे सावधान
हाजार बार संशोयर
अन्ध अजानाते
आमि तोमाय रेखे एलेम
इश्वरेर हाते ।

समर्पण

रिमझिम लगी नदी के ऊपर
ज्वार उठा है जल में
जैसे गुप्त रखी आशा हों
यहां वहां बांसों के फांकों
कभी एक दो टिमटिम टिमटिम
जुगनू बुझते बलते

भरा गगनतल व्यथा भार से
बिजली का जी जलता
भर कराह जतलाता केवल
अंतहीन आकुलता
वह आकार-विहीन, हिंस्र, खल
बेहद बेहिसाब फेनिल जल
मौन इशारे से अदृष्ट के
गुम हो गया बिखर के
तुम्हें छोड़कर आया हूँ मैं
हाथों में ईश्वर के ।

अपलक दिया एक जलता
छोटे से घर के भीतर
एक हाथ बेबस है लुढ़का
कंपमान छाती के ढिग जा
जर्जर स्मृति की सिली हुई
शीतल कथरी के ऊपर

मृदु बिसुरन के इंद्रजाल से
धुंधला हुआ किवार
लपक हाथ में उठ आती
मेरे तीखी तलवार
गुमी सुदूर काल के हियतल
देशांतरी बयार पड़ी चल
छुटपन की खुशबू से महमह
रात अँधेरी भर के
अपना प्रेम छोड़ आया मैं
हाथों में ईश्वर के।

उभर गर्भ आता भावी का
पालों की सलवट में
अन आगत की रुद्ध चाप से
पँजरे कँपते नदी पाट के
हिलहिल उठती पलुई
भीता मछली की छटपट में

अभिलाषा-पतवार सख्त हो
नाविक लेता थाम
कपट स्रोत में बहता मेरे
मृत शरीर का चाम
हिय में डांडों के कर्षण से
प्रलय अमरता आता है ले
लहर और सीमा के—
मतवाले संघर्षों पर से
अपने प्राण छोड़ आया मैं
हाथों में ईश्वर के।

तिमिर अर्चना भाग चली
मेरी विपरीत दिशा को
नील असीम नींद के ऊपर
विकल यंत्रणा से हो कातर
लिपट पकड़ कर मुक्तिहीन
जागृति की मूर्ख दया को

फिर भी खड़ा एक घर साबित
कुंजलता का घेरा
जहां लगाते जमघट, डाले
पूर्व पुरुषगण डेरा

उनका वह धीमा धीमा स्वर
सजग बरसता रहे निरंतर
अनगिन भय संशय के
अंधे अनजाने से स्वर में
तुम्हें छोड़ कर आया हूँ मैं
हाथों में ईश्वर के।

कवि : श्री यशवन्त दिनकर पेंढारकर
रूपान्तरकार : श्री प्रभाकर माचवे

चाफल (उत्तर सतारा) में ६ मार्च १८९६ में जन्म। मराठी में रवि-किरण-मंडल के एक प्रमुख सदस्य। १९३५ में शारदा-मंडल बड़ौदा के सभापति; १९५० में बम्बई मराठी साहित्य-सम्मेलन के सभापति; बड़ौदा सरकार द्वारा राजकवि के नाते १९४० में सम्मानित। प्रकाशन : सात कविता-संग्रह (जिन में 'यशोधन' बहुत प्रसिद्ध हुआ); तीन खंडकाव्य, गद्य के दो ग्रंथ और बच्चों के लिए सात पुस्तकें। पता: १९६।३४ सदाशिव पेठ, पूना–२।

★

पुकार

"आलों मो, आलों मी" करि पुकार कोण तरी ?
येणारा नोहे हा राजा वा माधुकरी

हा पुकार घुमवी नरहृदयीचा नारायण
दाहि दिशा करिती पडसादांनी पारायण

हा पुकार सांगतसे सरला दुरितांधकार
तेजाच्या झारींतुन वर्षत चैतन्य-धार
ता म्हणतो भयभीतां "झणि उघड टाक दार
व्यर्थ तुझी व्हायची न ह्यापुढती लूटमार
तेंवि ना क्षमा तयास होउ म्हणे जो चुकार
वृक्षाच्या वाढीला बांडगुलें जाच, भार

खाटल्यावरी कुणास नाहीं देणार हरी
श्रमिकांच्या पाठोशी मात्र उभा गिरिधारी
घामांतुनि दरवलल कस्तुरिचा घमघमाट
आणि झलंबल तसा रत्नांचा लखलखाट
रे, नांगर-फालानें निज ललाट-लेख लिहा
काली ही कामदुधा होते की नाहिं पहा"
ही ग्वाही देणारा ठाके हा कामकरी
निर्धारे ह्या नटला साभिमान शेतकरी

"आलों मी, आलों मी" कोण करी हा पुकार
दुबलयांना धीराचा वाटावा जो विसार
"लाविसि कां भालीं कर ? कां अश्रू ढालतोस ?
भाग्यास्तव कोणाचे उचलतोस पायपोस ?
रे मूढा, ह्यापुढतीं काय हवी लाचारी ?
रे, ज्याचा तोच इथें—कोण दुजा उद्धारी ?
येथ आडकाठी नच आवडत्या उद्योगा
ग्रह राशी सर्वकाल पुरवितील शुभयोगा
अंथरुणास्तव कोणा नलगे ती दगड-धूल
असलें तर फक्त पूर्वसंचितांत शोकमूल
एरव्हीं न कांहिं उणें राहणार संसारीं
पोहतील अवध संतोष-सुखा माझारीं"

हा पुकार घुमवी नरहृदयींचा नारायण
दाहि दिशा करिती पदसादांनीं पारायण

"आलों मी, आलों मी !" देई ही कोण हांक ?
हाके मधिं भरली त्या जरब कुणा, काय धाक !
"येथ अग्रपूजेचा मानकरी नच धनाढ्य
हार-तुरे त्याजलाच जनहितकर जो गुणाढ्य
रेटणार नाहिं कुणी कोणाचा येथ बांध
पीडतील नच पुढतीं दंडहस्त दुर्मदांध

न्यायदेवि ना गणील मतलबी कटाक्ष-खुणा
शास्त्यामधि जनतेचा पुरता निर्धास्तपणा
फांकतील बुद्धीचे जे जे उन्मेष नवे
ठरतिल ते सुहृदांचे मनुजा कल्याण-दुवे"

ललकारत आला युगनिर्माता भालदार
खडसावुनि सकलांना सांगत को व्हा हुशार

"आलों मी, आलों मी।" कोण करी हा पुकार
जो कां क्षतविव्हलांस दिव्य औषधोपचार
"आतां रणमैदानीं थाटतील उद्यानें
शस्त्रास्त्रें तरि कशास ऋषिमुनिच्या अस्थिविणें ?
कर्तव्याविण कोणा नाहिं जात, नाहि धर्म
दुस-याच्या क्षेमाचे अध्याहृत ज्यांत वर्म
प्रभुच्या अवतारास्तव संसृतिच्या मंदिरांत
पुरुष-स्त्री जणुं नंदादीपांतिल जोड वात
पूर्व थोर संस्कृतिची चित्तामधि चाड धरा
का विलंब मग व्हाया स्वर्गाहुनि रम्य धरा"

हा पुकार घुमवी नरहृदयीचा नारायण
दाहि दिशा करिती पडसादांनीं पारायण

"आलों मी, आलों मी !" काल नवा देइ साद
ह्या मराठ कवनीं तो ऐका भावानुवाद

★

पुकार

'आया मैं, आया मैं', कौन कह रहा पुकार
आनेवाला न अरे राजा या भिक्षु-सार।
यह पुकार उसकी जो नर-उर में नारायण
दशदिशि में गुंजित है प्रतिध्वनि का पारायण।
यह पुकार कहती है बिलमा दुरितांधकार
तेजस् की झारी से बरसी चैतन्य-धार।

वह कहता भीतों से: "रख दो अब खुले द्वार
व्यर्थ नहीं होगी अब तेरी कुछ लूटमार।
अब न क्षमा उसको जो काम से बचे असार
वृक्षों के विकसन में पर-पुष्टक कष्ट, भार।
खटिया पर बैठे को देगा नहीं कोई हरी
श्रमिकों के पीछे सदा खड़ा हुआ गिरधारी।
उनके पसीने से कस्तूरी महकेगी
पसीने की बूँदों से रत्नमाल चमकेगी।
रे, हल के फाल से ललाट-लेख लिखो, लिखो
काली मिट्टी भी कामधेनु बनती देखो।"
आये यह साक्षी बन कमकर, मजदूर,
निश्चय लेकर आये गरबीले ये किसान

'आया मैं, आया मैं', कौन कह रहा पुकार
दुर्बल को धीरज जो देता है नित उदार
"क्यों सिर पर हाथ धरे आंसू तुम ढाल रहे?
भाग्य के लिए किसकी जूतियां उठाते हो?
मूढ़! व्यर्थ मन में हो लाचारी पाल रहे
दूसरा न हर कोई उद्धारक अपना हो!
यहाँ नहीं कोई भी बाधा प्रियोद्योग में
ग्रह-तारे सदा तुझे सहायक सुयोग में
किसी को भी बिछाना न पत्थर या सिर्फ धूल
हो भी तो पूर्व-भाग्य में शायद शोकमूल
अन्यथा न कुछ भी हो कमी किसी के घर में
तैरेंगे सब सुख औ' संतोष-सागर में"

यह पुकार उसकी जो नर उर में नारायण
दशदिशि में गुंजित है प्रतिध्वनि का पारायण

'आया मैं, आया मैं!' कौन कह रहा पुकार
इसमें है डाँट किसी को तो किसी को अ'धार।
"यहां अग्रपूजा का हक़दार ना धनाढ्य
मालाएं फूल उसी को जो जन-हित-गुणाढ्य
कोई भी रोकेगा नहीं किसका भी मार्ग,

दंडहस्त दुर्मदांध देंगे नहीं पीड़ा-भाग
न्यायदेवि ! स्वार्थ के कटाक्ष मत मानना
शास्ता में जनता का पूरा विश्वास बना।
नये नये उन्मेष बुद्धि के जहाँ फैले
मनुज मात्र कल्याण-कारक हों सुहृदों के।"

ललकार देता युगनिर्माता चोबदार
सबको कहता है, रहो होशियार, होशियार !

'आया मैं, आया मैं !' कौन कह रहा पुकार
जो कि क्षताकुल जन को दिव्य औषधोपचार
"अब होंगे उद्यान कल तक के समर-स्थान
शस्त्रास्त्र होंगे बस ऋषिमुनि के अस्थि-दान
कर्तव्य छोड़ नहीं कोई भी जाति, धर्म
क्षेम दूसरे का यही अध्याहृत एक मर्म
संसृति के मंदिर में प्रभु के अवतार हित
पुरुष और नारी दो वर्तिकाएं एकत्रित"

यह पुकार उसकी जो नर-उर में नारायण
दशदिशि में गुंजित है प्रतिध्वनि का पारायण।

कवि : श्री जो० शंकर कुरुप्प
रूपांतरकार : श्री रामधारी सिंह दिनकर

उत्तर त्रावनकोर में १९०० में जन्म। महाराजा कालेज, अर्नाकुलम् में संस्कृत और मलायलम के प्राध्यापक। समस्त केरल साहित्य परिषद् के मंत्री तथा 'परिषद्-पत्रिका' के संपादक। १९१७ में 'साहित्य-कौतुकम्' पहली पुस्तक छपी। बाद में इसके चार भाग छपे। अब तक बीस कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिन में 'संध्या', 'निमिषम्', 'मुत्तुकल', 'चेङ्कदरिल्' आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। आप प्रकृति के प्रेमी और प्रतीकवादी कवि के नाते केरल में प्रसिद्ध हैं। आप ने उमर ख़य्याम की रुबाइयों और 'मेघदूत' के मलयालम में अनुवाद किये। पता : महाराजा कालेज, अर्नाकुलम्। साहित्य अकादेमी के मलयालम सलाहकारी बोर्ड के सदस्य हैं।

★

वन्दनं परयुक

वन्दनं परयुक, भारतांबिके, दैवं
तन् दयक्कहिंस तन्नसिधारयिल्क्कूटि
दूर दुष्करयात्र निर्वहिच्चिता, दीना–
कारयायालुं रक्तं मयिल् निन्नोलिच्चालुं,

इन्नले पुच्छिच्चोरु राज्यलक्ष्मिकलेल्लां
उन्नतात्भत स्नेहमधुरं पुणरवे,
मंगल स्वातन्त्र्यत्तिन्नुज्वलोज्वलमाय
मंजुल प्रभातत्तिलविडन्नेत्तिच्चेर्न्नु ।
प्राचियुं प्रतीचियुं मूड़क्कुं जयारवं
वीचियाय्यन्नेत्ति मुक्कुन्न् हिमवाने !
पौटर् तन् हृन्नीडत्तिल् निन्नुयर्न्नानन्दङ्ल्
सौरमार्गत्तिल्च्चेल्व् कोटि तन् चिरकिन्मेल् !
रक्तदाहमान्नोरु साम्राज्यसिंहत्तिन्टे
शक्तवुं कुटिलवुंमायिरुन्नतां दंष्ट्र
काणुक, कोड़िञाता किटप्पू निरं मंडि
त्ताणुपों चन्द्रक्कलपोलेयिप्पलरियिल ।
इरुलिल् त्तिलंडिय कण्णुकल्, चरित्रत्तिन्
अरुकिल्क्काणां मायुं रण्टु तारकल् पोले ।
निन् मुग्धमाकुं कालिल्स्सटयाल् परुषमां
तन् मुखमुरुम्मक्कोण्टावृद्ध सिंह निल्पू ।
वन्यनोतिकलतु केवलं मरक्कुमो !
धन्यमां निन् सौहार्द्दमन्नन्नु पुलर्त्तुमो !
वन्दनं परयुक धर्मपालिके, दैवं
तन् दयक्कान्नन्दाश्रु गद्गद स्वरयायि
पावने, पौरस्त्यमां दिङ्मुखं तुटुक्कुन्नू
तावक स्वातन्त्र्यत्तिन् स्वच्छमामुदयत्तिल्
एन्तिनिङने शोणशोणमाकुवान् ?—ओर्त्तील्
निन्तिरुवतियुते हृदय तकर्न्नु पों ।
इन्नलेत्तिरुवटल् वरियेच्चुट्टिच्चुट्टि
अन्नेटुं कडुमरत्तिकल् नावुकलाट्टि,
आइरं करिन्तुरंकरयिल् कूटित्तन्टे
वायिटक्किकटेक्काट्टिप्पुलयुं स्वेच्छातंत्रं
विडुंङि ञोरिच्च निन् प्रियपुत्ररिल् तन रक्तं
ओड्ड़कुन्नतुण्टावामिप्पोड़ुमितिन् पिये ।

ग्रामवुं नगरवुं वयलुं काटुं मेटुं
आ महाधीरन्मार् तन् विटरुं स्मृतिकलाल्
अव तन्नितलुकल् वीशिटुं वर्ण्णंङलाल्;
अवयिल्त्तिङ्ं त्यागोन्माद सौरभंङलाल्
इन्नू कोल्मयिर् कोल्वू, निन् कण्णिल् निन्नुँ रण्टु–
मून्नु निर्मल स्नेहानुग्रह कणिककल्
पूतमां स्वातन्त्र्यत्ते श्वसिक्कान् जीविक्कात
अश्वातराय वीणा वीरपुत्ररिलप्पोड़िञ्ञावू !
वन्दनं पय्युक वीरमातावे, दैवं–
तन् दयक्कभिमानदीप्तममात्मावोटे !
चंङल विधिकृतमेन्नुवेच्चट्टास्यत्तिन्
तोंङल तान् तनिक्कलंकारमाय वारित्तूक्कि,
भीरुवाय्–स्वातन्त्र्यमेन्नुच्चरिक्कुवान् पोलुं
भीरुवाय्–तलर्न्न निन् जीवितं मयंङुँपोल्
निन्मान्य पुत्रन् वीर 'तिलकन्' स्वातन्त्र्यं तन्
जन्मावकाशं तानेन्नाद्धमाय् प्रख्यापिक्के
नुँङी निन्नात्मावु "यूणियन् जेक्को" टुन्न
नटुतामत्युद्धतध्वजत्तिन् तरयोटे !
एंकिलुमतिन् कट पुड़ंङील तिन्निरुल्
तंकिटुँ निड़ल् नींङू निन् चरित्रत्तिल्क्कूटि ।
क्रूरमामतिन्नटि कुतिरान् स्वरक्तं नी
धारधारयायेत्र पकर्न्नीलतिल्प्पिन्ने !
एत्रयो किरीटत्तिन् कल्लटिच्चुरप्पिच्चोर्
अत्तरक्कुमेलेत्र साहसं तकर्न्नील !
धर्मत्तिन् नवायुधशालयिल् निन्नु पिन्ने
कर्मकोविदनाय राष्ट्रीयमहायोगि
यालिनाल् मुरियाते, तीइनाल् दहिक्काते
वाच्चिटुमोरायुधं पुतुतायटुत्तत्ति ।
विनयं पठिच्च पोलक्कोटियिता, धीर
सुनये, निन पादत्तिलत्तल ताड़ति निन्नल्लो ।

वन्दनं परयुक विश्ववन्दिते दैव
तन् दयक्काशाफुल्ल स्वच्छ मानसत्तोटे !
कालं निन् धर्माज्जित स्वातंत्र्यमुद्घोषिप्पान्
नील निर्मल शब्दगुणकाकाशत्तिने,
नोक्कुक महाघण्टयाक्कि वार्त्तुं, नालु
दिक्कुकलिरुल तुणियतिल निन्नूर्त्तीट्टुन्नु
श्रोलमा मणियता ञालुन्नू महाविश्व
शाल तन् मध्यत्तिकल् प्रियदर्शनमायि
मुम्परिञ्ञिट्टिल्लात्त मादकस्वातंत्र्यत्तिन्
सम्पन्न पानत्ताल कूत्ताटुमोरो काट्टुं
चलिक्केच्चलिक्के निन् पूर्ण मगलत्तिन्ट
ओलि तान् तुलुम्पुन्नु चक्रवालत्तिन् वक्किल्
वोर मट्ट्ल मुखनिग्गलक्कालारावो
दारमाक्कुन्नू मुन्नु सागरमीस्सन्दर्भं ।
शारद दिनोदयश्री निवर्त्तुन्नू स्वच्छ
गौरमां वेलिच्चत्तिन् वेण्कोट्टक्कुट मन्द
उन्नत स्वातंत्र्यत्तिन् रत्न पीठत्ते, देवी
वन्नलंकरिच्चालुं ! निन् नामं मुड़ङ्ट्टे
नूरु भाषयिल्, नूरु नूरु गानत्तिल्, नूरु
नूरु नूरन्ताराष्ट्र मण्डलंङलिलम्मे !
वन्दनं परयुक रंजितविश्वे, दैवं
तन् दयक्कुल्ककन्धर सुन्दराननत्तोट !
अंब, निन् स्वातंत्र्यत्तिन् चिह्नत्तप्पारिक्कुन्नि
तंबरं नीलच्छायमाय निन् कवचत्तिल्
उन्मुखं हिमवानुं विन्ध्यनुं मलयनुं
नम्मुटे पताकयुल्पुलकं दर्शिक्कट्ट ।
रांङुमिन्नविटत्तेयभिमानत्तोटोप्पं
पोंडुमी त्रिवर्णंङल् चक्रांकमनोज्ञंङल्
लीलयिलपूर्वाभिमानत्तिल् पाटुं मलं
चोलकल् पोलुं मारिल् ञेरि मेल् कत्तीटुन्नू

नालेयी स्वातंत्र्यत्तिन् चिरकिन् काट्टेट्टिट्टु
नीलेयेड़लयाड़ि हर्षत्ताल् विज़ृंभिक्कुं
नालेयीस्समाधान वाग्दानं कण्टिट्टेरे
नाटुकलाशा पिंछं विरुत्ति नृत्तं चेय्युं
ई अजय्यतयुटे निड़ल काणुम्पोल तोक्किकन्
वाय तन्नत्तान् पोत्ति निल्कुमक्रमि राज्यं
भयमे दूरे दूरेयाशंके ! नवयुगो-
दयमायतिन् रश्मिपूशुमीक्कोटि कण्टो ?
मेटुकल्, वयलुकल् काटुकल्, कटलुकल्,
नाटुकल्, नगरंङलोक्केयुं मेले मेले ।
ईयनुग्रहं नूकुं कोटि तन् धीर स्निग्ध–
छायियिल् प्रापिक्कट्टे शान्तियुमैश्वर्यवुं !
वन्दनं परयुक राष्ट्रनायिके, दैवं
तन् दयक्कभंगुर मगले जयिच्चालुं !!

★

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद ।
हे जननि ! अहिंसा की असिधारा पर पग धर
दुष्कर यात्रा कर पूर्ण श्रमित-पद, क्षाम, क्षीण,
अन्ततः, रक्तपंकिल गात्रे ! तू पहुँच गई
उस ओर, जहां मुसकाता है—
उज्ज्वल स्वतन्त्रता का मंजुल-मंगल प्रभात

सारी वसुधा आनन्दलीन,
है गूँज रहा स्वागत में हर्ष विकल कलकल
उल्लसित पूर्व पश्चिम के ये गोलार्ध युगल,
दाएँ-बाएँ उठ रही जय-ध्वनि की तरंग,
उन्नत हिमाद्रि का भाल भींगता जाता है ।

उठ रहा तिरंगा आच्छादित कर सौर-मार्ग,
जाग्रत जन-मन में ऊर्ध्वगमन की अभिलाषा।
जनता के हृत्पिजड़ से कढ़ आनन्द-विहग
ऊपर झंडे के पास पहुँच मँडराते हैं।

वह उधर क्षितिज के पास अधोमुख कान्तिहीन,
जो डूब रही है मन्द प्रभा,
वह नहीं चन्द्र की कला,
कुटिल शोणित-पिपासु साम्राज्यवाद की दंष्ट्रा है।
वे दो तारे जो दीख रहे हैं अस्तमान,
आखें वे इसी दनुज की हैं
अँधियाले में डूबी प्रकाश की कणिकाएं,
इतिहास-गर्त में पड़े हुए अंगारों सी।

कल तक जो हँसी उड़ाती थीं,
तुझको पीड़ा पहुँचाती थीं,
वे राजलक्ष्मियां आज चकित-विस्मित विभोर।
घर-घर से बाँह बढ़ाती हैं,
तुझको अपनी अग्रजा मान,
फूलों के हार पिन्हाती हैं।

मां ! देख, मुग्ध यह वृद्ध सिंह
कैसे चरणों से सटा खड़ा,
तेरे पद को निज जिह्वा से सहलाता है।
पर, हाय ! कहीं यह वन्य जीव
रक्ताक्त जिघांसा को तजकर,
करता भारत का शीलग्रहण,
बन पाता तेरा अमिट मित्र।

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद।
हे धर्मपालिके ! परम पावनी मां तेरे,
सौभाग्य-उदय से यह कैसी लाली छिटकी,
संपूर्ण पूर्व-जग का आनन जगमगा उठा।

है कहां आज स्वेच्छाचारी वह कुटिल तंत्र,
जो अंध कालकक्षों के भीतर जीभ खोल,

अथवा फाँसी के तख्तों पर फण फुला फुला,
तेरे निरीह पुत्रों का शोणित पीता था ?
हो गये तिरोहित कालनाग,
हो गये तिरोहित मां तेरे वे वीर तनय,
जिनके शोणित से भाग्य देश भर का जागा,
पर, हाय ! जिन्होंने स्वाधीनता नहीं देखी ।

उन वीर हुतात्माओं की स्मृति के रुचिर फूल
उन धीर शहीदों की पंखड़ियों की लाली,
उन अजय योगियों के जीवन की त्याग सुरभि,
वे मिटे नहीं, सब जीवित हैं ।
उनसे ही तो सुरभित हैं अपने ग्राम-नगर,
उनसे ही तो शोभित हैं ये वन-विपिन-खेत,
भुज उठा खड़े हैं उनकी पूजा में पहाड़,
नदियाँ गुण गाती हुई सरकती जाती हैं ।
मां आज पुण्य का पर्व, शहीदों की स्मृति में
अपने कृतज्ञ दो अश्रुविन्दु ढल जाने दे ।

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद ।
वह भी था मातः एक समय
जब हम जड़ता में पड़े हुए अवसाद-ग्रस्त,
दासत्व-पाश को कह विधि का अविचल विधान
सोये थे हो निश्चेष्ट,
मुक्ति के हित आयास न करते थे
ऐसी कदर्यता थी, मुख से
स्वातंत्र्य शब्द कहने में भी हम डरते थे ।
तब फटी भीरुता की बदली,
उच्चरित हुआ गंगाधर के दुर्वार कंठ से महासत्य,
केसरी तिलक की वाणी में,
जाग्रत स्वदेश का कंठीरव
प्लुत में चिंघार पुकार उठाः—
'स्वातंत्र्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार ।'
इसे जैसे भी हो, हम पायेंगे,

मस्तक का दे बलिदान,
मुक्ति की मणि का मोल चुकायेंगे।

फट गई भीरुता की बदली,
फट गया गहन तम किमाकार
नदियों का जल खलभला उठा,
करवट लेकर जागे पहाड़।
यूनियन जैक तिलमिला उठा,
ध्वज काँपा नीचे नींव हिली,
सत्ता का आनन म्लान हुआ,
जनता को नूतन ज्योति मिली।
तब से तूने जाने कितने पावक-शायक संधान किये,
जानें होमें कितने सपूत,
कितने किशोर बलिदान किये।

यूनियन जैक का उन्मूलन, पर हो न सका।
सोने चाँदी से पिटा हुआ ध्वजपिंड मूल में था दृढ़तर,
थे किये हुए उसको अजेय,
चरणों को कस कर गहे हुए निर्लज्ज किरीटों के पत्थर।

इतने में सत्यव्रती योगी,
कर्मठता के पूर्णावतार,
गांधी आये, खुल गया
धर्म के शस्त्रालय का नया द्वार।

यह धर्मशस्त्र जो नहीं आग में जलता है,
जिसको न काट सकतीं लोहे की तलवारें,
जो अयस और प्रस्तर, दोनों पर ही, समगति से चलता है।
है धन्य वीर जो यह धर्मास्त्र उठाता है,
सौ बार धन्य वह पुरुष अहिंसा के सम्मुख
जो खड्ग फेंक लज्जित हो शीश झुकाता है।
यह उसी पुण्यमय महाशस्त्र का फल सुन्दर,
जो ध्वजा शूलवत् कभी हृदय में चुभती थी,
लहराती है वह विनयशीलता में भर कर।

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद ।
हे जगत्पूजिते विश्वधाम के मध्य-स्थित,
घंटावत् रवगुणमय व्यापक यह महाव्योम,
तेरी महिमा नित गाता है,
त्रिभुवन को तेरी धर्माजित पावन स्वतंत्रता का संदेश सुनाता है ।

बह रहा क्षितिज को छू उद्वेलित मुक्त पवन,
वन-राजि मुक्त हो सजती है,
द्रुम के पत्तों में अनिल नहीं सीत्कार रहा,
हरियाली में मांगलिक बीन यह बजती है ।
तीनों समुद्र हुंकार रहे गंभीर नाद,
गर्जन में भेरी की गत है ।
उस मन्दिर के ये ताल भव्य जिसका किरीट
अवनीतल का सर्वोच्च शृंग हिम-पर्वत है ।

प्रस्तुत स्वतंत्रता का यह मणिमय सिंहासन,
बैठो मां ! हम मिल कर आरती सजायेंगे,
नाना भाषाओं में लिक्खेंगे एक नाम,
नाना छन्दों में एक गीत हम गायेंगे ।

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद ।
मातः तेरे चक्रांक-केतु को व्योमदेव
सादर सुनील निज कंचुक पर लहराते हैं,
मस्तक उन्नत कर मलय, हिमालय, विंध्याचल,
झंडे की छवि को देख छके रह जाते हैं ।

स्वातंत्र्य-गरुड़ का पक्ष तीन रंगों वाला,
इसके झोंके सर्वत्र सौख्य सरसायेंगे,
जिस दिवस पड़ेगी भूतल पर छाया इसकी,
पुलकित प्रफुल्ल सातों समुद्र लहरायेंगे ।

यह शान्ति सुन्दरी के हाथों का इन्द्रधनुष,
कल इसे देख आशा के रंजित पिच्छ खोल,
नाचेंगे राष्ट्रों के मयूर, उत्सव होगा,
इस उर्विजेयता की छाया को देख भीत,

अत्याचारी झुक जायेंगे।
बन्दूकों के मुख अनायास मुद्रित होंगे,
सुस्तायेगा संसार शान्ति की छाया में
निश्चय विमुक्त युद्ध के रोग से भव होगा।

हो दूर भविष्यत् की चिन्ते, मानस के भय,
री आशंके, अब और नहीं आतंक जगा।
हो चुका उदित प्राची के तट पर युग नवीन,
यह केतु उसी की किरणों में लहराता है।
इस महाकेतु के नीचे सारे ग्राम-नगर,
सागर-उपसागर, शैल शृंग वन-विपिन-खेत
युग युग भोगें सुख-शान्ति स्नेह में बँधे हुए।

करुणामय की करुणा को शतशः धन्यवाद।
भारत का मन सारी वसुधा से एक रहे।
अयि राष्ट्र-नायिके, मंगलमयि, तेरा जय हो!

कवि : श्री मैथिलीशरण गुप्त

जन्म १८८६, चिरगाँव, झांसी। सन् १९०७ से 'सरस्वती' के माध्यम से कविता के क्षेत्र में प्रवेश किया। 'भारत भारती' द्वारा प्रचुर ख्याति मिली। अनेक उपेक्षित विषयों को लेकर प्रबन्ध काव्यों की रचना की। साकेत, यशोधरा, पंचवटी, जयद्रथ-वध, काबा और कर्बला, अर्जन और विसर्जन, सिद्धराज, झंकार और द्वापर प्रमुख काव्यग्रंथ हैं। बंगला के प्रसिद्ध काव्य मेघनाद-वध, तथा विरहिणी-व्रजांगना और पलासी का युद्ध, तथा अंगरेज़ी से रुबाइयात उमर ख़ैयाम आदि का अनुवाद किया। 'जयभारत' नामक बृहद् काव्यग्रंथ हाल ही में प्रकाशित हुआ है। आजकल राज्य-सभा के सदस्य हैं। नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली में रहते हैं।

★

ध्वज-वन्दना

निज विजय पताका फहरे,
मुक्त वायु-मण्डल में अपनी मानस-लहरी लहरे।
जय मैत्री करुणा-धारामय यह ध्वजचक्र हमारा,
कभी क्रांति का सूर्य यही है, कभी शान्ति शशितारा।
हमें विजय का सूत्र मिला है, इसी चक्र के द्वारा,
रक्षक यही, सुदर्शन अपना, किरण कुसुम-सा प्यारा।
कालचक्र यह हाथ हमारे, लक्ष्य क्यों न थक थहरे ?
निज विजय पताका फहरे।

कर्मक्षेत्र हरा है अपना, ज्ञान शुभ्र मनमाना,
बलि बलवती विनीत भक्ति का कल केसरिया बाना।
इस त्रियोग के तीर्थराज में हमें स्वधर्म निभाना,
अपनी स्वतंत्रता से सबका मुक्तिमंत्र है पाना।
सब समान भागी जीवन के यही घोषणा घहरे,
निज विजय पताका फहरे।

त्याग हमारा धर्म, किन्तु हम हरण कभी न सहेंगे,
दानवत्व से मानवता का वरण कभी न सहेंगे।
किसी आततायी का तुष्टीकरण कभी न सहेंगे,
और कहीं भी व्यर्थ किसी का मरण कभी न सहेंगे।
वह नरता ही क्या, बर्बरता जिसके आगे ठहरे ?
निज विजय पताका फहरे।

इस ध्वज पर जूझे स्वजनों पर ध्यान जहाँ जाता है,
मस्तक ऊँचा होने पर भी मन भर-भर आता है।
निर्भय मरण वरण कर ही नर अमर कीर्ति पाता है,
ऐसे पुत्रों की ही आशा रखती भू-माता है।
भू-माता का यह अंचल-पट छाया करके छहरे,
निज विजय पताका फहरे।

कवि : श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

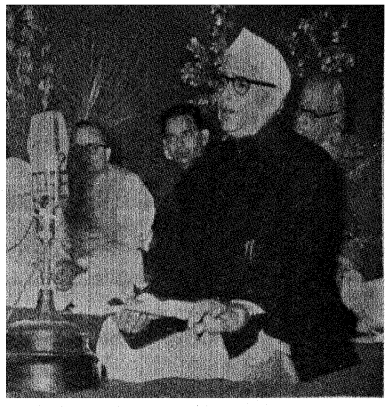

जन्म १८९७, मयाना गाँव, उज्जैन। राष्ट्रीय संक्रांति-काल में 'विप्लव गान' शीर्षक रचना बहुत लोकप्रिय हुई। रचनाएं कुंकुम, अपलक और क्वासि नामक संग्रहों में संगृहीत हैं। आचार्य विनोबा भावे के भूदान-यज्ञ से प्रभावित होकर विनोबा-स्तवन की रचना की है। कार्यक्षेत्र आदि से ही कानपुर रहा है। देश के स्वतंत्रता-संग्राम में प्रमुख भाग लिया। आजकल संसत्सदस्य हैं, ५ विंडसर प्लेस नई दिल्ली में रहते हैं।

★

जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे !

जन-तारिणि, मन दैन्य-हरणि, हे !
विभु-भूज-वन्दिनि, दृग-आनन्दिनि, तिमिर-निकन्दिनि, ज्ञान-तरणि, हे!
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे !

१

जय जय, हे गुर्वाणि मातृ-भू, जयतु, जयतु, हे परम तपस्विनि,
जय, हे भक्ति मालिके, जय, हे जग पालिके, अजस्र-पयस्विनि।
राम-कृष्ण-जिनदेव तथागत-जननि, जयतु हे गान्धी-प्रसविनि,
जय, ध्रुवस्वामिनि, मोक्ष-प्रदायिनि, जय, गंगा-तरणिजा सरणि हे !
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि हे !

२

ओ माँ ! तव अंचल में संचित युग-युग का इतिहास अमर, चिर,
तव मलयानिल धोर श्वास में सन्तत गति उल्लास अजर, स्थिर।
ध्यान निमीलित तव दृग-पुट में आए हैं ये नवल स्वप्न घिर,
हम क्षण-भंगुर, तव प्रसाद से बने सनातन मातृ-धरणि हे !
जन तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे !

३

माता किया तुम्हीं ने तो था सर्वप्रथम दिक्-काल-अतिक्रमण,
और, तुम्हीं ने रहसि किया था अनाद्यन्त के संग सन्तरण।
तुम कितने ही मन्वन्तर-गिरि-शृंगों का कर चुकीं संभ्रमण,
जग ने तुमही से पाया है मुक्ति-मंत्र, कल्याण-करणि, हे !
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे !

४

वीत-रागिणी तुम अनुरागिणि, अवलोको अपने ये जन-गण,
इनका हिय झकझोरो, ओ माँ, कर दो सत्-प्रेरित इनके मन।
भस्मसात् कर दो क्षण में तुम, ये निम्नगा-वृत्ति के कर्षण,
आज दीप्त कर दो वेदी तुम अग्नि-पुंज हे, यज्ञ-अरणि, हे !
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि, हे !

५

बल दो, माँ, निष्कासित कर दें हम भीतर का गरल हलाहल,
बल दो, शान्त कर सकें हम निज अन्तरतर की शोणित-खल-भल।
नव विहान वेला में हम भी बनें आज नव मानव निश्छल,
तव अतीत के हम प्रतीक हों, यह बल दो नव-भाव-भरणि, हे !
जन-तारिणि मन-दैन्य-हरणि, हे !

६

आंखों में हो तेज, भुजों में शक्ति, हृदय में दृढ़ता अविचल,
कर्मों में हो यज्ञ-भावना, मन में हो सन्निष्ठा का बल।
प्राणों को नव-सृजन-प्रेरणा उत्प्राणित करती हो पल-पल,
यह वर दो अपने पुत्रों को, धर्म-धारिणी, चित-विहरणि हे।
जन-तारिणि, मन-दैन्य-हरणि हे !

कवि : श्री सुमित्रानंदन पंत

जन्म १९०० में, कौसानी, ज़िला अल्मोड़ा में। शिक्षा बनारस तथा इलाहाबाद में पाई। असहयोग आंदोलन में पढ़ाई छोड़ दी। तब से अनवरत साहित्य-सेवा कर रहे हैं। रचनाएं : उच्छ्वास, वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, पल्लविनी, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, रजत शिखर, शिल्पी और अतिमा काव्य-संग्रह हैं। ज्योत्स्ना नाटक है। गद्य में कहानियों का एक संग्रह 'पाँच कहानियां' तथा 'गद्यपथ' प्रकाशित किया है। नवीन कविता-संग्रह अतिमा अभी प्रकाशित हुआ है। आजकल आकाशवाणी के हिन्दी कार्यक्रमों के प्रमुख निर्देशक हैं। इलाहाबाद में रहते हैं।

★

भारत दर्शन

(भारत के सांस्कृतिक कार्यक्रम को श्रद्धांजलि)

आज सूक्ष्म दर्शन से जगता, मनोनयन में,
भारत का आनन हिरण्य स्मित,--जीवन कण के
तम से पर, आदित्य वर्ण उसकी आभा का
भूत शिखर के चरण चूड़ सा शत सूर्योज्वल !

ह्रास नाश से रहित, अमर चेतना शक्तियां,
वह अन्तर्हित किये हृदय में, सूक्ष्म, सूक्ष्मतम,

गुह्य रहस, वर्णनातीत जग के मंगल हित।

उसके अन्तरतम के ज्योतिर्मय शतदल पर
स्वयं खड़े हैं, सत्य चरण धर, अविनाशी प्रभु,
तेजोमय, जाज्वल्य, हिरण्य-शैल से अद्भुत !
पुरुष पुरातन...पुरुष सनातन, विश्व मोहिनी,
निज वंशी के सृजननाद से जगा अचित् से,
स्वर्गिक पावक के असंख्य चैतन्य लोक स्मित,
बरसा रहे अनन्त शून्य में, स्वरलय वर्तित,
कोटि सूक्ष्म सौंदर्य प्रेय आनन्द के भुवन,
प्राणों की आशा, आकांक्षा से चिर उर्वर
जीवन मन के स्वर्ग, तृप्ति के सुख में नीरव !
रूप गंध रस स्पर्श शब्द के बिम्ब जगत बहु
निज असीम वैभव में अक्षय, दमक रहे जो,
सप्त चेतनाओं के रंग स्वरों में छहरे !

संयम तप के स्वर्ण शुभ्र नीहार से जड़ित,
भारत के चेतना शृंग पर, ध्यान मौन रव,
परम पुरुष वह नृत्य कर रहे, सृजन हर्ष की
विस्मृति में लय ! जिनके अति चेतन प्रकाश से
शोभा सुषमा की सहस्र दीपित मरीचियां
आभा की आभाएँ, छाया की छायाएँ,
दिशा काल में फूट रहीं, शत सुर धनुओं के,
रंगों की आलोक क्रान्ति से सृष्टि चकित कर !

झर झर पड़ते सतत, सत्य, शिव सुन्दर उनके
महाकाल औ' महादिशा को चेतनता से
मुग्ध चमत्कृत कर,–रोमांचित दिव्य विभव से !

आज धरा के पूतों के इस तपस क्षेत्र में,
जीवन तृष्णा, प्राण सुधा औ' मनोदाह से।

क्षुब्ध, दग्ध, जर्जर, जनगण चीत्कार कर रहे,
घृणा, द्वेष, स्पर्धा से पीड़ित वन-पशुओं से,
बिखर गया मानव का मन अनुवीक्षण पथ से,
वहिर्जगत में, स्थूल भूत विज्ञान से भ्रमित !
अन्तर्दृष्टि विहीन, मनुज निज अन्तर्जग के
वैभव से अनभिज्ञ, हृदय से शून्य रिक्त हैं !
आज आत्मघाती मन अपने ही हाथों से
मनुजजाति का महामरण निर्माण कर रहा
भौतिक रासायनिक चमत्कारों से अगणित !
तर्क-नियन्त्रित यांत्रिकता के पद-प्रहार से
ध्वस्त हो रहे, अन्तर्मन के सूक्ष्म संगठन।
सत्यों के, आदर्शों के, भावों, स्वप्नों के,
श्रद्धा, विश्वासों के, संयम तप साधन के,
मनुष्यत्त्व निर्भर है जिन ज्योतिस्तंभों पर !

ऐसे मरणोन्मुख जग को कहता मेरा मन,
और कौन दे सकता, नव-जीवन, आश्वासन,
शांति, तृप्ति, निज अंतर्जीवन के प्रवाह से
भारत के अतिरिक्त आज ? जो शाश्वत, अक्षर
अंतर ऐश्वर्यों का ईश्वर है वसुधा पर !
कहता मेरा मन, भारत ही के मंगल से,
भू-मंगल, जन-मंगल, देवों का मंगल है !

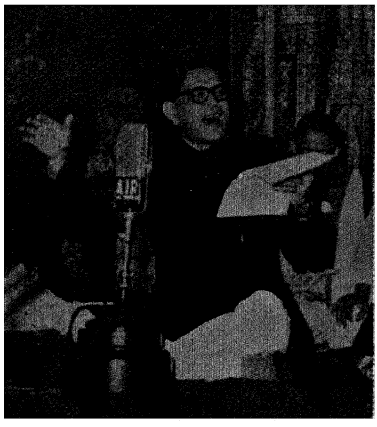

कवि : श्री रामधारी सिंह दिनकर

जन्म १९०८ में, मुंगेर, बिहार में। प्रारम्भिक रचनाएं वीर बाला और प्रण-भंग विद्यार्थी-जीवनकाल में कीं। अनंतर 'रेणुका' द्वारा ख्याति मिली। अन्य रचनाएं हैं हुंकार, रसवंती, सामधेनी, द्वंद्वगीत, रश्मिरथी, नील-कुसुम आदि। 'कुरुक्षेत्र' प्रबन्धकाव्य है, जो बहुत प्रसिद्ध हुआ। 'अर्धनारीश्वर' और 'मिट्टी की ओर' गद्य रचनाएं हैं। बिहार में अनेक पदों पर रहने के उपरांत अब दिनकर ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया है। आजकल संसद् के सदस्य हैं, और साउथ ऐवेन्यू नई दिल्ली में रहते हैं।

★

हिमालय का संदेश

वृथा मत लो भारत का नाम।
मानचित्र में जो मिलता है, नहीं देश भारत है,
भू पर नहीं, मनों में ही, बस, कहीं शेष भारत है।
भारत एक स्वप्न, भू को ऊपर ले जानेवाला,
भारत एक विचार, स्वर्ग को भू पर लानेवाला।

भारत एक भाव, जिसको पाकर मनुष्य जगता है,
भारत एक जलज, जिस पर जल का न दाग लगता है।
भारत है संज्ञा विराग की, उज्ज्वल आत्म-उदय की,
भारत है आभा मनुष्य की सबसे बड़ी विजय की।
भारत है भावना दाह जग-जीवन का हरने की,
भारत है कल्पना मनुज को राग-मुक्त करने की।
जहां कहीं एकता अखण्डित, जहां प्रेम का स्वर है,
देश-देश में खड़ा वहां भारत जीवित, भास्वर ह।
भारत वहां, जहां जीवनसाधना नहीं है भ्रम में,
धाराओं को समाधान है मिला हुआ संगम में।
जहां त्याग माधुर्यपूर्ण हो, जहां भोग निष्काम,
समरस हो कामना, वहीं भारत को करो प्रणाम।
वृथा मत लो भारत का नाम।

साधना इस व्रत को भारी।
पग-पग पर हिंसा की ज्वाला, चारों ओर गरल है,
मन को बांध शान्ति का पालन करना नहीं सरल है।
तब भी जो नर-वीर असिव्रत दारुण पाल सकेंगे,
वसुधा को विष के विवर्त से वही निकाल सकेंगे।
मना रहे क्यों, यह व्रतपाली केवल भारत होगा,
शेष विश्व हिंसा-लिप्सा में, इसी भांति, रत होगा।
किसी एक को नहीं, बदलना होगा साथ सभी को,
करना होगा ग्रहण शील भारत का निखिल मही को।
शमित करेगा कौन वह्नि प्रहरी का जाल बिछाकर,
रोकेगा विस्फोट विश्व को बल से कौन दबा कर।
तब उतरेगी शान्ति, मनुज का मन जब कोमल होगा,
जहां आज है गरल, वहां शीतल गंगाजल होगा।
देश-देश में जाग उठेंगे जिस दिन नर-नारी,
साधना इस व्रत को भारी।

धर्म को, श्रद्धा को मत त्यागो।

शील मुकुट नरता का, सबसे बड़ी भव्यता का है,
नहीं धर्म से बढकर कोई मित्र सभ्यता का है।
निरी बुद्धि के लिए भावना का मत दलन करो रे,
जो अदृश्य प्रहरी है, उससे भी तो कभी डरो रे।
शान्ति चाहते हो तो पहले सुमति शून्य से मांगो,
नवयुग के प्राणियों! ऊर्ध्वमुख जागो, जागो, जागो।

धर्म को, श्रद्धा को मत त्यागो।